दिसम्बर 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10

रात को दूध में जामन डालने के बाद बार-बार उंगली डालकर हिलाकर देखता है कि दही बन रहा है या नहीं? इसे दखल करना कहते हैं, और उससे सुबह दही में दखल हो जाती है! इस संसार में लोग इसी तरह दखल करके जीते हैं!

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 2
अखंड क्रमांक : 134
दिसम्बर 2016

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

दखलंदाज़ी से रुकी है प्रगति

संपादकीय

ज्ञान के बाद महात्माओं की प्रगति हो रही है या नहीं उसका पता कैसे चलेगा? उसका जवाब दादाश्री एक ही वाक्य में देते हैं कि खुद दखल करता है या नहीं वह देख ले, तो उससे समझ में आ जाएगा। जब तक दूसरे किसी के साथ या खुद के साथ दखल हो जाती है तब तक समझ लेना कि सब बिगड़ गया।

दादाश्री कहते हैं कि संसार में लोग दखल करके ही जी रहे हैं। दखल करके जीवन व्यर्थ गँवाया। जहाँ देखो वहाँ सभी जगह दखल ही करता रहता है। घर में भी पति-पत्नी एक दूसरे की गलतियाँ निकालकर दखल करते ही रहते हैं। मतभेद होते रहते हैं और ऊपर से कहते हैं कि वह तो संसार का चक्र है। फिर डेवेलपमेन्ट कहाँ से होगा? उसके लिए तो देखना पड़ेगा कि ऐसा क्यों होता है? उनके उपाय खोजने पड़ेंगे तब आगे प्रगति हो सकेगी। पुरुष और स्त्री (पति-पत्नी) को एक दूसरे के काम में दखल करना ही नहीं चाहिए। बच्चों के साथ भी दखल नहीं करना चाहिए। घर में किसी से कुछ भी कहना, वह अहंकार का सब से बड़ा रोग है। ये सभी ऋणानुबंध से इकट्ठे हुए हैं और अपना-अपना हिसाब लेकर ही आए हैं वहाँ दखल करके अपना क्यों बिगाड़ें?

घर में और बाहर, सभी के साथ जो कुछ भी होता है, उसका समभाव से *निकाल* करने की ज़रूरत है। अगर सभी जगह एडजस्ट होकर टकराव टाले जाए तो सांसारिक दखल रहेगा ही नहीं। अगर किसी से टकराव हो जाए तो अपनी गलती है, ऐसा समझकर दखल को टाल देना है। अन्य किसी का दोष निकालना ही नहीं है क्योंकि आपने पहले दखल की है इसलिए सामने वाला व्यक्ति आपके साथ टकराव करता है। वर्ल्ड में कोई भी ऐसी स्थिति में नहीं है कि आप में दखलंदाज़ी कर सके। आपके जीवन में जो भी दु:ख, तकलीफें या उलझनें आती हैं, वे इसलिए आती हैं क्योंकि आपने दखल की हैं। एक मच्छर भी नहीं छू सकता, इतना स्वतंत्र जगत् है। अत: आपकी दखलंदाज़ी अगर बंद हो जाएगी तो सब साफ हो जाएगा। वर्ना यह दखलंदाज़ी किसी को भी नहीं छोड़ती।

आपका कोई *ऊपरी* भी नहीं है और आप में किसी भी जीव का दखल भी नहीं है। और ये लोग जो कुछ भी दखल करते हैं, वह आपकी भूल की वजह से दखल करते हैं। आप पूर्व में दखल करके आए हो, ये उसी के परिणाम हैं और सारे अंतराय भी उसी वजह से हैं। नहीं तो (वर्ना) खुद ब्रह्मांड का मालिक है, पर दखल के कारण बंधे हुए हैं। संसार में क्या सुख है? खुद के परमात्म सुख में रह सके ऐसा है। कोई दखल कर ही नहीं पाए ऐसी सच्ची आज़ादी मिल सकती है, ऐसा है। अत: किसी में भी दखल तो करना ही नहीं चाहिए। सामने वाला अगर दखल करे तो आपको उसे सहन कर लेना चाहिए। और अगर आपसे दखल हो जाए तो प्रतिक्रमण करके साफ कर लेना चाहिए।

व्यवहार में होने वाली दखलंदाज़ी को पहचानकर दखल टालने के लिए प्रस्तुत संकलन उपयोगी रहे और महात्मा को मोक्षमार्ग में प्रगति के लिए सहायरूप बने, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

दखलंदाज़ी से रुकी है प्रगति

दखल बंद होने पर होगी प्रगति

प्रश्नकर्ता : आप कई बार ऐसा पूछते हैं कि प्रगति हो रही है या नहीं? तो प्रगति किस जगह देखी जा सकती है? यानी प्रगति में क्या दिखाई देता है? कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : दखल नहीं होता हो, किसी के साथ दख़लंदाज़ी नहीं हो या फिर अपने आप में भी कोई दखल नहीं हो, इतना देख लें तो प्रगति हुई है। किसी के साथ दखल हो गई तो बिगड़ गया।

समझना है अर्थ दखल का

प्रश्नकर्ता : दादा, दखलंदाज़ी का अर्थ क्या है?

दादश्र : दखल का अर्थ क्या होता है? कोई पूछे कि 'दही किस तरह बनता है? वह मुझे सिखाइए, मुझे बनाना है।' तो मैं उसे तरीका बताऊँ कि 'दूध गरम करके, ठंडा करना। फिर उसमें एक चम्मच दही डालकर हिलाना। फिर ढँककर आराम से सो जाना, फिर कुछ भी मत करना।' अब वह रात को दो बजे 'यूरिन' के लिए उठा हो, तब वापस अंदर रसोई में जाकर दही में उंगली डालकर हिलाकर देखता है कि दही बन रहा है या नहीं? इसे दखल करना कहते हैं, और इससे सुबह दही में गड़बड़ हो जाती है! इसी तरह इस संसार में गड़बड़ करके लोग जीते हैं!

जहाँ वन फैमिली, वहाँ नहीं होता दखल

(आप) दोनों (पति-पत्नी) एक फैमिली की तरह जीते हो न? या अलग-अलग?

प्रश्नकर्ता : एक फैमिली की तरह!

दादाश्री : ऐसा? घर में कभी वाइफ के साथ खटपट हो जाती है?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभार हो जाती है।

दादाश्री : तो फिर फैमिली में ऐसा? आपकी एक फैमिली नहीं है? वह तो आपकी फैमिली कहलाती है। फैमिली में भी ऐसा होता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ज़रूर होता है।

दादाश्री : खुद की फैमिली में? अन्य फैमिली के साथ तो हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : खुद की फैमिली के साथ भी होता है।

दादाश्री : तो (खुद) जानता ही नहीं है कि फैमिली क्या है। खुद की फैमिली अर्थात् खुद की। उसमें कुछ दखल नहीं होना चाहिए। आपको क्या लगता है, फैमिली में ऐसा होता होगा?

प्रश्नकर्ता : होता है, होता है।

दादाश्री : खुद की फैमिली में? आइ एन्ड

माइ वाइफ (मैं और मेरी पत्नी) और मेरे बच्चे, वह तो आपकी फैमिली कहलाती है। उसमें कोई दखल नहीं होना चाहिए। बाहर वालों के साथ, अन्य फैमिली से दखल हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : हर एक की अलग-अलग पर्सनालिटी होती है इसलिए फैमिली में कॉन्फ्लिक्ट (घर्षण) होगा ही न?

दादाश्री : तो फिर वह फैमिली नहीं कहलाएगी और आप कहते हो 'दिस इज़ माइ फैमिली!' और फैमिली किसे कहते हैं कि जहाँ दखल नहीं हो।

दखल टालने की शुरुआत करो घर से

वन फैमिली में क्या होना चाहिए, आप दूसरों को क्या सलाह देते हो? कोई अंदर-अंदर मत झगड़ना। अंदर-अंदर किच-किच मत करना, ऐसा कहोगे न? आप सलाह देने वाले और आपके ही घर किच-किच! उतना ही कहता हूँ, ज़्यादा नहीं कहता। मोक्ष की बात जाने दो अभी, इतना करोगे तो घर में क्लेश नहीं रहेगा।

धर्म की शुरुआत पहले घर से करो। घर में किंचित्मात्र दखल न रहे और किसी को दुःख न हो, उस तरह के फैमिली मेम्बर बन जाओ।

वाइफ की कमी निकालकर करता है दखल

क्या घर में वाइफ अच्छा-अच्छा नहीं खिलाती?

प्रश्नकर्ता : बहुत अच्छा-अच्छा खिलाती है।

दादाश्री : हाँ। तो फिर उनके साथ आपको दखल नहीं करना चाहिए लेकिन आपका जो इगोइज़म है न, वह पागलपन किए बगैर रहता नहीं है न! ऐसी आदत पड़ गई है, उसमें आप क्या कर सकोगे? अच्छा खाना बनाया हो, रत्नागिरी हापूस लाकर रस बनाया हो, बहन ने पूड़ियाँ बनाई हों, स्वादिष्ट सब्ज़ियाँ बनाई हों, सबकुछ बनाया हो और अगर कढ़ी में ज़रा नमक ज़्यादा डल जाए तो खाता जाएगा और कढ़ी चखकर, 'यह नमकीन कढ़ी...' अरे भाई, खा ले न, सीधा बन जा न। इस कढ़ी को एक तरफ रख दे, दूसरा सब खा ले न! लेकिन सीधा नहीं रहता और फिर सभी का मूड बिगाड़ देता है। वह खुद तो नहीं खाता सो नहीं खाता पर सभी के चेहरे उतर जाते हैं। बच्चे बेचारे डर जाते हैं। क्या आपको ऐसा शोभा देता है? कभी कढ़ी खारी नहीं बन सकती क्या? तब शोर मचाएँ तो क्या वह अच्छा कहा जाएगा? अरे, रोज़ तो कढ़ी अच्छी बनती है और अगर एक दिन अच्छी नहीं बनी तो सीधा रह न! क्या एक दिन भी सीधा नहीं रहना चाहिए? आपको कैसी लगी यह बात? अच्छी लगी न? लेकिन लोग क्या करते हैं कि, किसी दिन कढ़ी खारी बन गई हो तो पत्नी का अपमान कर देते हैं।

(यह तो) मनुष्यपन खो दिया! मानव जीवन व्यर्थ गँवाया। मानव जन्म तो बहुत मूल्यवान है। अचिंत्य चिंतामणि देह, वह मनुष्य कहलाता है। तो भाई, उसे इसी में गँवा दिया? खाने-पीने में ही? और औरत (पत्नी), पत्नी को भी रखना नहीं आया, उसके साथ भी रात-दिन दखल ही दखल, झगड़े ही झगड़े।

दखल नहीं करे तो पड़ेगा प्रभाव

'वाइफ' की कुछ भूलें आप सहन करो तो उस पर प्रभाव पड़ता है। यह तो बिना भूल के भूल निकाले तो क्या होगा? कुछ पुरुष स्त्री को लेकर शोर मचाते हैं, वह सारा शोर गलत है। कुछ साहब ऐसे होते हैं कि 'ऑफिस' में कर्मचारियों के साथ दखल करते रहते हैं। सब

कर्मचारी भी समझ जाते हैं कि साहब में बरकत नहीं है, लेकिन करें क्या! पुण्य ने उसे बॉस की तरह बिठाया है! घर पर तो बीवी के साथ पंद्रह-पंद्रह दिनों से केस पेन्डिंग पड़ा होता है! साहब से पूछेंगे, 'क्यों?' तो कहेगा कि, 'उसमें अक्ल नहीं है।' और वह अक्ल का बोरा! बेचेंगे तो चार पैसा भी नहीं आएगा! साहब की 'वाइफ' से पूछें तो वे कहेंगी कि 'जाने दो न उनकी बात। कोई बरकत ही नहीं है उनमें।'

समभाव से *निकाल* करने पर नहीं रहेगा दखल

घर के सभी लोगों के साथ, आसपास, ऑफिस में सब लोगों के साथ (इस ज्ञान का उपयोग करके) 'समभाव से *निकाल*' (निपटारा) करना। भाए नहीं, घर पर जब ऐसा भोजन थाली में आए, वहाँ 'समभाव से *निकाल*' करना। किसी को परेशान मत करना, जो थाली में आए, वह खा लेना। जो सामने आया वह संयोग है और भगवान ने कहा है कि संयोग को धक्का मारेगा तो वह धक्का तुझे लगेगा! इसलिए हमें नहीं भाए ऐसी चीज़ परोसी हो, फिर भी हम उसमें से दो चीज़ें खा लेते हैं। अगर नहीं खाएँ, तो दो लोगों से झगड़े होंगे। एक तो, जो लेकर आया है, जिसने बनाया उसके साथ झंझट होगी, उसे तिरस्कार महसूस होगा और दूसरी तरफ खाने की चीज़ से। खाने की चीज़ कहती है कि 'मैंने क्या गुनाह किया है? मैं तेरे पास आई हूँ और तू मेरा अपमान कर रहा है? तुझे ठीक लगे उतना ले लेकिन मेरा अपमान मत कर।' अब क्या हमें उसे मान नहीं देना चाहिए? हमें तो कोई दे जाए, तब भी हम उसे मान देते हैं क्योंकि एक तो मिलता नहीं है और मिल जाए तो मान देना पड़ता है। यह खाने की चीज़ दी और उसकी आपने कमी निकाली तो इससे सुख घटेगा या बढ़ेगा?

प्रश्नकर्ता : घटेगा।

दादाश्री : जिसमें घटे ऐसा व्यापार तो नहीं करोगे न? जिससे सुख घटे ऐसा व्यापार ही नहीं करना चाहिए न? मुझे तो बहुत बार नहीं भाती हो ऐसी सब्ज़ी हो, वह खा लेता हूँ और ऊपर से कहता हूँ कि आज की सब्ज़ी बहुत अच्छी है।

प्रश्नकर्ता : वह द्रोह नहीं कहलाता? न भाता हो और हम कहें कि भाता है, तो वह गलत तरह से मन को मनाना नहीं हुआ?

दादाश्री : गलत तरह से मन को मनाना नहीं है। एक तो 'भाता है' ऐसा कहें तो अपने गले उतरेगा। 'नहीं भाता है' ऐसा कहा तो फिर सब्ज़ी को बुरा लगेगा। बनाने वाले को गुस्सा आएगा और घर के बच्चे क्या समझेंगे कि ये दखल करने वाले व्यक्ति हमेशा ऐसा ही किया करते हैं? घर के बच्चे आपकी आबरू नाप लेते हैं।

जगत् है व्यवस्थित, नहीं है कहीं दखल

हमारे घर में भी कोई नहीं जानता कि 'दादा' को यह नहीं भाता या भाता है। यह भोजन बनाना क्या बनाने वाले के हाथ का खेल है? वह तो खाने वाले के 'व्यवस्थित' के हिसाब से थाली में आता है, उसमें दखल नहीं करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा आपने यह जो बात कही कि आपको अगर कड़वा दिया जाए तो भी आप ज़रा सा खा लेते हो। हमें अगर कड़वा नहीं भाता हो तो हम कैसे लेंगे? अर्थात् वह जो लाइकिंग(पसंद) है, अब उसकी बात कर रहे हैं हम।

दादाश्री : लेकिन 'ना' शब्द तो डिक्शनरी से निकाल देना। उस 'ना' की वजह से ही यह जगत् खड़ा रहा है। 'ना' कहने से ही लोग क्लेम

(दावा) करते हैं। 'हाँ' लाओ। फिर चाहे मुँह में रखकर 'थू' करना हो तो कर सकते हो, हर्ज नहीं है लेकिन उसकी इन्सल्ट मत करो। मैं तो कई बार, 'दादा प्रसाद लीजिए,' तो ले लेता हूँ और मूँगफली जैसा हो तो ज़ेब में रख लेता हूँ और जब बाहर जाता हूँ तब किसी को दे देता हूँ लेकिन इन्सल्ट नहीं करता क्योंकि उसने तो मुझे 'व्यवस्थित' के आधार पर कहा कि, 'लीजिए'।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : और आप तो बिना दखल किए नहीं रहते। दखल मत करो। यह पूरा जगत् व्यवस्थित है। जो हो गया, वह व्यवस्थित है और जो हो रहा है, वह भी व्यवस्थित है। व्यवस्थित नहीं लगता!

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित है।

दादाश्री : और जो कर रहे हैं वह भी 'व्यवस्थित' है। किसे डाँटोगे? बेटे को, बहू को? किसी को भी डाँटने जैसा है इस जगत् में? हमने तो क्लियर कट सारी ज्योग्राफी (भूगोल) दे दी हैं। बिल्कुल क्लियर कट। ज्यों-ज्यों समझ में आता जाएगा, त्यों-त्यों कुछ और ही आनंद, कुछ और ही बात समझ में आएगी। कह रहा हूँ न कि मुझे सत्ताइस साल से टेन्शन नहीं हुआ है बोलो, सिन्स सत्ताइस साल से (27 सालों से)!

यह ज्ञान ही सब काम करता है, दूसरा कोई नहीं करता। ज्ञान ही जानने की ज़रूरत है। 'मैं कौन हूँ?' वह ज्ञान तो मिल गया लेकिन अगर इस व्यवहारिक ज्ञान के बारे में सब जानने को मिलेगा तो फिर किसी भी प्रकार का दखल नहीं रहेगा।

नहीं करना है दखल एक-दूसरे के काम में

प्रश्नकर्ता : पत्नी को पति की कौन-सी बात में हाथ नहीं डालना चाहिए?

दादाश्री : (पत्नी को) पति की किसी भी बात में दखल ही नहीं करना चाहिए। पत्नी और पति को एक-दूसरे की हेल्प करनी चाहिए। पति को यदि चिंता रहती हों, तो उसे किस प्रकार चिंता न हो, पत्नी को इस तरह से बोलना चाहिए। उसी तरह पति को भी पत्नी मुश्किल में न पड़े, ऐसा देखना चाहिए। पति को भी समझना चाहिए कि पत्नी को बच्चे घर पर कितना परेशान करते होंगे! घर में टूट-फूट हो जाए तो पति को चिल्लाना नहीं चाहिए लेकिन फिर भी लोग चिल्लाते हैं कि पिछली बार सब से अच्छे एक दर्जन कप-रकाबी लेकर आया था, आपने वे सब क्यों फोड़ डाले? सब खत्म कर दिया। इससे पत्नी के मन में लगता है कि 'मैंने तोड़ डाले? मुझे क्या वे खा जाने थे? टूट गए तो टूट गए, उसमें मैं क्या करूँ? मी काय करूँ?' कहेगी। अब वहाँ भी लड़ाई-झगड़ा। जहाँ कुछ लेना नहीं और देना भी नहीं, जहाँ लड़ने का कोई कारण ही नहीं है, वहाँ भी लड़ना!

हमारे और हीरा बा के बीच कोई मतभेद ही नहीं होता था। हमने उनके काम में हाथ ही नहीं डाला कभी भी। घर की किसी भी बात में हम हस्तक्षेप नहीं करते थे। वे भी हमारी किसी बात में दखल नहीं करती थीं। हम कितने बजे उठते हैं, कितने बजे नहाते हैं, कब आते हैं, कब जाते हैं, ऐसी हमारी किसी बात में कभी भी वे हमें नहीं पूछती थी और किसी दिन हमें कहें कि 'आज जल्दी नहा लेना।' तो हम तुरंत धोती मँगवाकर नहा लेते थे। अरे, अपने आप ही तौलिया लेकर नहा लेते थे। क्योंकि हम समझते थे कि ये 'लाल झंडी' दिखा रही हैं, इसलिए कोई परेशानी होगी। पानी नहीं आने वाला हो या ऐसा कुछ हो तभी वे हमें जल्दी नहाने के लिए

कहेंगी, यानी हम समझ जाते हैं। अर्थात् व्यवहार में थोड़ा-थोड़ा आप भी समझ लो न कि किसी के काम में हाथ डालने जैसा नहीं है।

घर में गेस्ट बन कर रहने से नहीं होता दखल

घर पर भोजन की थाली आती है या नहीं आती?

प्रश्नकर्ता : आती है।

दादाश्री : जो भोजन चाहिए वह मिल जाता है, पलंग बिछा देते हैं, फिर क्या? और यदि खटिया बिछाकर न दें तो वह भी आप बिछा लेना और हल ला देना। शांति से बात समझानी पड़ती है। आपके संसार के हिताहित की बात क्या गीता में लिखी होती है? वह तो खुद को ही समझनी पड़ेगी न?

'हज़बेन्ड' मतलब 'वाइफ' की भी 'वाइफ'! (पति यानी पत्नी की पत्नी) यह तो लोग पति ही बन बैठते हैं! अरे, 'वाइफ' क्या पति बन बैठने वाली है! 'हज़बेन्ड' यानी 'वाइफ' की 'वाइफ'। घर में ज़ोर से आवाज़ नहीं होनी चाहिए। यह क्या 'लाउड स्पीकर' है? यह तो यहाँ चिल्लाता है तो गली के नुक्कड़ तक सुनाई देता है! घर में 'गेस्ट' की तरह रहो। हम भी घर में 'गेस्ट' की तरह रहते हैं। कुदरत के 'गेस्ट' की तरह यदि आपको सुख न आए तो ससुराल में क्या सुख आने वाला है?

गेस्ट के नियमों का पालन करके, रहो दखल मुक्त

जिनके 'गेस्ट' हों, उनके वहाँ पर कैसा विनय होना चाहिए? मैं आपके यहाँ 'गेस्ट' हूँ तो मुझे 'गेस्ट' की तरह विनय नहीं रखना चाहिए? आप अगर कहो कि 'आपको यहाँ पर नहीं सोना है, वहाँ पर सोना है', तो मुझे वहाँ सो जाना चाहिए। खाना यदि दो बजे आए तो भी मुझे शांति से खा लेना चाहिए। जो परोसे वह आराम से खा लेना चाहिए, वहाँ पर शोर नहीं मचा सकते क्योंकि 'गेस्ट' हूँ। अब यदि 'गेस्ट' रसोई में जाकर कढ़ी हिलाने लगे तो कैसा कहलाएगा? घर में दखल करने जाओगे तो आपको कौन खड़ा रखेगा? तेरे थाली में अगर बासुंदी रखें तो खा लेना, वहाँ ऐसा मत कहना कि 'हम मीठा नहीं खाते हैं।' जितना परोसा जाए उतना आराम से खा लेना। खारा परोसे तो खारा खा लेना, बहुत नहीं भाए तो थोड़ा खा लेना, परंतु खाना ज़रूर! 'गेस्ट' के सभी नियम पालन करना। 'गेस्ट' को राग-द्वेष नहीं करने होते हैं।

आड़ाई वह है दखल ही

ये लोग तो कहते हैं, 'तेरी बनाई हुई चाय नहीं पीऊँगा।' ओहोहो! तो फिर किसकी बनाई हुई चाय पीएगा अब? यानी वह जो पति है, वह धमकाता है पत्नी को। क्या कहेगा? 'तूने चाय बिगाड़ दी न, इसलिए अब कभी तेरे हाथ की चाय नहीं पीऊँगा।' धमकाता है बेचारी को, *आड़ाई* (अहंकार का टेढ़ापन) करता है। कितनी *आड़ाईयाँ!* उस वजह से दु:ख पड़ते हैं न!

अत: *आड़ाईयाँ* ही बाधक हैं। मोह तो बिल्कुल भी बाधक नहीं है। वह तो दो बार मोह रहेगा और फिर तीसरी बार भीतर से ऊब जाएगा।

अच्छा भोजन हो लेकिन अगर मुँह फुलाकर खिलाए तो? अच्छा नहीं लगेगा न? 'रहने दे तेरा खाना' ऐसा कहेगा न? अरे, मुँह चढ़ाकर तो अगर हीरे भी दिए जाएँ तो अच्छा नहीं लगेगा। अगर ये साहब मुँह चढ़ा कर हीरा दे जाएँ तो आप क्या कहोगे? 'लो! अपना हीरा अपने घर

ले जाओ।' ऐसा कहोगे या नहीं? तो हीरे की कीमत अधिक है या मुँह चढ़ाने की? अपने यहाँ लोग हीरा नहीं लेते जबकि फॉरेन में तो अगर विलियम का मुँह चढ़ा हुआ हो, फिर भी लेडी खा लेती है। और अपने यहाँ तो क्लेश हो जाने पर भी ये स्त्रियाँ ऐसा नहीं करतीं। ये तो आर्य संस्कारी स्त्रियाँ हैं! फॉरेन में ऐसा चल जाता है। फॉरेन में तो मुँह चढ़ाकर हीरे दिए जाएँ न, तो कहेगी, 'अरे भले ही चीखे-चिल्लाए। हमें तो हीरे मिल गए न!' और यहाँ पर ऐसा नहीं चलता। ये तो आर्य सन्नारियाँ हैं। आपको कैसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : इसलिए हम यदि घर पर मुँह न चढ़ाएँ तो वह हीरे से भी ज़्यादा है न?

छोटा बच्चा भी रुपए नहीं छूने देता। कहेगा, 'ये तो मेरे रुपए हैं, लाओ।' एक चीज़ में सरल होता है, तब दूसरी जगह पर *आड़ाई* रहती है। *आड़ाई* भी दखल ही कहलाती है, चाहे कम-ज़्यादा हो। किसी में ज़्यादा दखल होता है और प्रकृति के विरुद्ध कुछ होता हुआ देखे तो आड़ा हुए बिना नहीं रहता। प्रकृति के विरुद्ध कुछ हुआ कि दखल किए बिना नहीं रहता। उसे सरलता से सुलझने नहीं देता, खुद अंदर हस्तक्षेप करता है। जब तक वह *आड़ाई* नहीं निकलेगी, तब तक छूटा नहीं जा सकता। *आड़ाई* निकल जाए तो भगवान बन जाए ऐसा पद है, यह जगह ऐसी है। 'दादा' आड़ाई-शून्य हो चुके हैं!

आक्षेपों के परिणाम स्वरूप होते हैं दखल

सभी कुछ तैयार है परंतु भोगना नहीं आता, भोगने का तरीका नहीं आता। मुंबई के सेठ बड़ी टेबल पर खाना खाने बैठते हैं लेकिन खाना खाने के बाद, आपने ऐसा किया, आपने वैसा किया, तू मेरा दिल जलाती रहती है बिना काम के। अरे! बिना बात के कोई जलाता होगा? न्यायसंगत जलाता है। बिना न्याय के तो कोई जलाता ही नहीं। लोग लकड़ी को जलाते हैं लेकिन क्या लकड़ी की अलमारी को कोई जलाता है? जो जलाने की चीज़ है उसी को जलाते हैं। यों ही आक्षेप लगाते हैं। भान ही नहीं है। मनुष्यपन बेभान हो गया है, वर्ना घर में कहीं आक्षेप लगाए जाते होंगे? पहले के समय में घर में लोग एक-दूसरे पर आक्षेप लगाते ही नहीं थे। अरे, लगाने की जगह पर भी नहीं लगाते थे। मन में ऐसा समझते थे कि आक्षेप लगाऊँगा तो सामने वाले को दु:ख होगा जबकि कलियुग में तो चपेट में लेने को घूमते हैं। घर में मतभेद क्यों होना चाहिए?

दखल करना है, कमज़ोरी

प्रश्नकर्ता : मतभेद होने का कारण क्या है?

दादाश्री : भयंकर अज्ञानता! संसार में जीना नहीं आता, बेटे का बाप होना नहीं आता, पत्नी का पति होना नहीं आता। जीवन जीने की कला ही आती नहीं! ये तो इतना सुख होने पर भी सुख नहीं भोग सकते।

आपसे कभी दखल हो जाता होगा न? दखल हो जाता है न, मतभेद?

प्रश्नकर्ता : वह तो, संसार का चक्र ही ऐसा है।

दादाश्री : नहीं, लोगों को बहाने बनाने के लिए यह अच्छा मिल गया है। 'संसार चक्र ऐसा ही है,' ऐसा बहाना बनाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं कहता कि मेरी कमज़ोरी है।

प्रश्नकर्ता : कमज़ोरी तो है ही। कमज़ोरी है तभी तो तकलीफ हो रही है न!

दादाश्री : हाँ, बस। इसलिए लोग 'संसार का चक्र' कहकर (कमज़ोरी) छिपाते हैं। छिपाने से वह बनी रहती है। कमज़ोरी क्या कहती है कि, 'जब तक मुझे पहचानोगे नहीं, तब तक मैं नहीं जाने वाली।' संसार बिल्कुल भी स्पर्श नहीं करता। संसार निरपेक्ष है। सापेक्ष भी है और निरपेक्ष भी है। वह तो हम ऐसा करे तो ऐसा और नहीं करें तो कुछ भी नहीं, कोई लेना-देना नहीं है। मतभेद होना तो कितनी बड़ी कमज़ोरी है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन घर में तो मतभेद चलते रहते हैं, वह तो संसार है न!

दादाश्री : लोग तो बस, रोज़ झगड़े होते हैं फिर भी कहते हैं, 'ऐसा तो चलता रहता है,' अरे, लेकिन उससे डेवेलपमेन्ट (प्रगति) नहीं होगा। ऐसा क्यों हो रहा है? ऐसा क्यों कह रहा है? क्या हो रहा है? उसकी जाँच करनी पड़ेगी।

जहाँ मतभेद है वहाँ दखल

यह पूरी लाइफ, यूज़लेस (बेकार) लाइफ! पूरे दिन चिंता! मनुष्यपन चला जाएगा! अरे, लाइफ अच्छी नहीं होनी चाहिए भला? मतभेद देखा है या नहीं देखा?

प्रश्नकर्ता : देखा है न।

दादाश्री : बहुत देखे हैं न? ये सब मतभेद ही भटकाते हैं। जहाँ मतभेद है, वहाँ भटकन है। मतभेद अर्थात् अलग-अलग मार्ग पकड़कर बैठना। एडजस्टमेन्ट नहीं हो पाने का क्या कारण है? परिवार में ज़्यादा लोग हैं इसलिए न! ज़्यादा लोग हों तो सभी के साथ मेल नहीं बैठ पाता दखल हो जाता है।

पूरे दिन झगड़े, झगड़े और झगड़े! एक भी घर झगड़े रहित नहीं है। कुछ न कुछ बखेड़ा हुआ ही होता है। शाम तक तीन इंसानों में तैतीस मतभेद पड़ चुके होते हैं! ग्यारह-ग्यारह हर एक के हिस्से में आते हैं न!

आश्रित को नहीं होता दखल

इन बंगलों में भी सुख नहीं मिला! इतने बड़े-बड़े बंगले! देखो, बंगलों में उजाला कितना है, लाल-हरे उजाले हैं। स्टेनलेस स्टील की थालियाँ कितनी हैं लेकिन सुख नहीं मिला। पूरे दिन धमाचौकड़ी, धमाचौकड़ी...! ये कौए, चिड़ियाँ सभी घोंसलों में जाकर मिल-जुलकर बैठे होते हैं और ये मनुष्य ही हैं जो कभी भी मिल-जुलकर नहीं बैठते! अभी भी टेबल पर लड़ रहे होंगे क्योंकि यह जाति पहले से ही सीधी नहीं है। सत्युग में भी सीधी नहीं थी, तो कलियुग में, अभी दूषमकाल में कहाँ से सीधी होगी? यह जाति है ही अहंकारी न! ये गाय-भैंस सभी 'रेग्युलर' हैं, उन्हें कुछ भी परेशानी नहीं होती क्योंकि वे सभी आश्रित हैं। सिर्फ मनुष्य ही निराश्रित है इसलिए ये सभी मनुष्य चिंता करते हैं। बाकी, वर्ल्ड में दूसरे सभी जानवर या कोई देवलोक वासी चिंता नहीं करते, सिर्फ ये मनुष्य ही चिंता करते हैं। इतने अच्छे बंगले में रहते हैं फिर भी बेहद चिंता। अब खाते समय भी दुकान याद आती रहती है कि, 'दुकान की खिड़की खुली रह गई, उससे पैसा वसूलना रह गया!' यहाँ पर खाते-खाते चिंता करता रहता है कि जैसे अभी ही नहीं पहुँच जाने वाला हो! अरे, रख न एक ओर! खा तो ले चुपचाप! लेकिन सीधी तरह से खाना भी नहीं खाता। खिड़की खुली रह गई इसलिए अंदर चिढ़ा हुआ रहता है इसलिए फिर बहाना निकालकर पत्नी के साथ झगड़ा शुरू कर देता है। अरे, तू चिढ़ा हुआ है किसी और पर और पत्नी पर क्यों गुस्सा निकाल रहा है?

इसलिए अपने यहाँ कवि गाते थे कि 'कमज़ोर आदमी पत्नी के सामने बहादुर बनता है।' और कहाँ बहादुर बनेगा? बाहर बहादुर बनने जाएगा तो कोई पीट देगा! इसलिए घर पर बहादुर! क्या यह सब शोभा देता है?

नासमझी से सर्जित होती है दखलंदाज़ी

सिर्फ मनुष्य ही बिल्कुल पामर जीव है, बुद्धि का उपयोग करते हैं इसलिए पामर हो गए हैं। भगवान ने इन्हें निराश्रित कहा है, बाकी के सभी आश्रित हैं। आश्रित को भय नहीं होता। कौए वगैरह सभी पक्षियों को है कोई दु:ख? जो जंगल में घूमते हैं, सियार वगैरह उन सभी को भी कोई दु:ख नहीं है। सिर्फ जिन्होंने इन इंसानों की संगत की, ये कुत्ते, गाय, वगैरह वे सभी दु:खी होते हैं। वर्ना, ये इंसान तो मूल रूप से दु:खी हैं और जो उनकी संगत में आते हैं, वे सब भी दु:खी हो जाते हैं।

मनुष्य नासमझी की वजह से दु:खी हैं, समझ लेने गया इसलिए दु:खी है। यदि समझ लेने नहीं गया होता तो यह नासमझी खड़ी नहीं होती। ये सभी दु:ख नासमझी का परिणाम है खुद मन में ऐसा मानता है कि 'मैंने यह समझ लिया, यह समझ लिया।' अरे, खाक समझ लिया? समझा फिर भी पत्नी के साथ झगड़ा तो मिटता नहीं। पत्नी के साथ कभी झगड़ा हो जाए तो उसका भी *निकाल* करना तुझे नहीं आता। पंद्रह दिनों तक तो मुँह चढ़ा रहता है। कहेगा, 'किस तरह *निकाल* (निपटारा) करूँ?' जब तक उसे पत्नी के साथ हुए झगड़े का *निकाल* करना भी नहीं आता, तब तक वह धर्म में भी क्या समझ पाएगा? पड़ोसी के साथ झगड़ा होने पर *निकाल* करना नहीं आए, तो वह किस काम का? झगड़े का *निकाल* करना तो आना चाहिए न?

समझदारी से आएगा दखल का हल

इतने बड़े-बड़े जज होते हैं, वे (कोर्ट में मुवकिल को) सात साल की सज़ा सुना देते हैं। बाद में वे जज मुझे मिले थे। घर पर उनका पत्नी के साथ कुछ झगड़ा हो गया हो, तो वह केस अभी तक पेन्डिंग ही होता है। मैंने कहा कि, 'इस केस का पहले हल लाओ न! उस सरकारी केस का तो हर्ज नहीं है।' लेकिन इसमें कैसे हल लाए? पत्नी के साथ झगड़ा हो जाए तो कैसे हल करना, वह समझ नहीं है न! मनुष्य समझता नहीं है कि इसका *निकाल* कैसे करना है, तब टाइम उसका *निकाल* कर देता है। वर्ना इन लोगों में तो खुद अपने आप, अभी के अभी, तुरंत ही 'एडजस्ट' कर लेने की समझ ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : बात को संभालना भी नहीं आता।

दादाश्री : नहीं, लेकिन जहाँ पता ही नहीं चलता, वहाँ पर संभालेगा किस तरह? फिर टाइम उसका *निकाल* कर देता है। आखिर में टाइम तो हर एक चीज़ को खत्म कर देता है।

समझदारी तो ऐसी होनी चाहिए न, कि यह दखल हो गया है तो उसका हल क्या लाएँ? ऐसा क्यों होना चाहिए? ये सभी जानवर संसार चला रहे हैं। क्या उनके पत्नी-बच्चे नहीं हैं? उनकी भी पत्नी है, बच्चे हैं, सभी हैं। अंडों को इतनी अच्छी तरह सेते हैं और अंडे देने से पहले घोंसला तैयार कर लेते हैं। क्या उनमें यह समझ नहीं हैं? और ये समझ के बोरे! अक्ल के बोरे! जब इन्हें अंडे देने होते हैं तब अस्पताल ढूँढते रहते हैं। अरे, घोंसला बना न! लेकिन ये अक्ल के बोरे अस्पताल ढूँढते हैं और जानवर बेचारे अंडे रखने से पहले जान जाते हैं कि हमें

अंडे देने हैं इसलिए हमें घोंसला बनाना चाहिए। अंडे में से बच्चे होते हैं, फिर घोंसला तोड़ दें तो उन्हें हर्ज नहीं है, लेकिन उसे अंडे का तुरंत पता चल जाता है।

दखल नहीं, एडजस्ट हो जाओ

जीवन जीना कब अच्छा लगेगा कि जब पूरे दिन परेशानी न हो। शांति से दिन बीतें, तब जीवन जीना अच्छा लगेगा। अगर घर में दखल हो जाए तो जीवन जीना कैसे रास आएगा? यह तो पुसाएगा ही नहीं न! घर में दखल नहीं होना चाहिए। पड़ोसी के साथ शायद हो भी जाए, बाहरवालों के साथ हो जाए लेकिन घर में भी? घर में फैमिली की तरह रहना चाहिए। फैमिली लाइफ कैसी होनी चाहिए? घर में सिर्फ प्रेम, प्रेम और प्रेम ही छलके। यह फैमिली लाइफ है ही कहाँ? दाल अगर खारी हो जाए तो शोर मचा देते हैं। ऊपर से ऐसा कहते हैं कि 'दाल खारी है।' अंडर डेवेलप्ड (अर्ध विकसित) प्रजा! डेवेलप्ड कैसे होते हैं कि अगर दाल खारी हो जाए तो एक तरफ रखकर बाकी का सब खा लेते हैं। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि दाल एक तरफ रखकर बाकी सब खा लें? इज़ दिस फैमिली लाइफ! (क्या यह फैमिली लाइफ है?) बाहर झंझट करो न! माइ फैमिली अर्थात् क्या कि आपस में किसी भी तरह की झंझट न हो। एडजस्टमेन्ट लेना चाहिए। अपनी फैमिली में एडजस्ट होना आना चाहिए। एडजस्ट एवरीव्हेर।

एक व्यक्ति मुझ से कहने लगा कि, 'दादा, मेरी बीवी घर में ऐसा करती है, वैसा करती है।' तब मैंने उसे कहा कि आपकी पत्नी से पूछने जाएँ तो वह क्या कहेगी कि 'मेरा पति कमअक्ल है।' अब इसमें आप सिर्फ अपने लिए ही क्यों न्याय खोज रहे हो? तब उसने कहा कि, 'मेरा तो घर ही बिगड़ गया है, बच्चे बिगड़ गए हैं, बीवी बिगड़ गई है।' मैंने कहा, 'कुछ भी नहीं बिगड़ा है।' आपको देखना नहीं आता है। आपको अपना घर देखना आना चाहिए। हर एक की प्रकृति को पहचानना आना चाहिए।

लोगों का स्वभाव, एक जैसा नहीं होता। जैसा युग होता है, वैसा ही स्वभाव हो जाता है। सत्युग में आपसी मेल रहता था। घर में सौ सदस्य हों, फिर भी सब दादा जी के कहे अनुसार चलते थे और इस कलियुग में तो अगर दादा जी कुछ कहें तो उन्हें गालियाँ सुना देते हैं। पिता कुछ कहे तो पिता को भी वैसा ही सुना देते हैं। कलियुग में ऐसा होता है, उल्टा होता है। वह इस युग का स्वभाव है।

प्रकृति का साइन्स पहचानकर टालो दखल।

पहले क्या था? सत्युग में एक घर में सभी गुलाब और दूसरे घर में सभी चमेली और तीसरे घर में सभी चंपा! अब क्या हो गया है कि एक ही घर में चमेली भी है और गुलाब भी है! यदि गुलाब होगा तो काँटे होंगे और चमेली होगी तो काँटे नहीं होंगे। चमेली का फूल सफेद होगा, गुलाब का गुलाबी, लाल होगा। इस प्रकार आजकल सभी पौधें अलग-अलग हैं। सत्युग में जो खेत थे वे कलियुग में बगीचे बन गए हैं! लेकिन अगर उसे देखना नहीं आता तो उसका क्या हो सकता है? जिसे देखना नहीं आए उसे दुःख ही होगा न? यानी जगत् के पास इसे देखने की दृष्टि नहीं है। कोई खराब होता ही नहीं है। यह मतभेद तो खुद का अहंकार है। देखना नहीं आता उसका अहंकार है। देखना आ जाए तो दुःख है ही नहीं। पूरी दुनिया के साथ मुझे मतभेद नहीं होता। मुझे देखना आता है कि भाई, यह गुलाब है या चमेली है। वह धतूरा है या कड़वे नीम का फूल है, और ऐसा सब पहचानता हूँ।

अब मनुष्य तो मनुष्य ही है लेकिन आपको पहचानना नहीं आता। घर में पचास लोग हों, लेकिन आपको पहचानना नहीं आया इसलिए बखेड़ा होता रहता है। उन्हें पहचानना तो चाहिए न! घर में यदि एक व्यक्ति किच-किच करता रहता हो तो वह तो उसका स्वभाव ही है। इसलिए आपको एक बार समझ लेना चाहिए कि यह ऐसा है। क्या आप सचमुच पहचान जाते हो कि यह ऐसा ही है? फिर उसमें आगे कुछ जाँच करने की ज़रूरत है क्या? आप पहचान गए, फिर कुछ जाँच करने की ज़रूरत नहीं रहती। कुछ लोगों को रात को देर से सोने की आदत होती है और कुछ लोगों को जल्दी सोने की आदत होती है तो उन दोनों में ताल मेल कैसे होगा? और परिवार में सभी सदस्य साथ रहते हों, तो क्या होगा? घर में एक व्यक्ति ऐसा कहने वाला निकले कि 'आप कमअक्ल हैं,' तब आपको ऐसा समझ लेना चाहिए कि यह ऐसा ही बोलने वाला है। इसलिए आपको एडजस्ट हो जाना चाहिए। इसके बजाय अगर आप प्रत्युत्तर दोगे तो आप थक जाओगे। क्योंकि वह तो आप से टकराया लेकिन आप भी उससे टकराएँगे तो आपकी भी आँखें नहीं हैं, ऐसा प्रमाणित हो गया न! मैं कहना चाहता हूँ कि प्रकृति का साइन्स जानो। बाकी, आत्मा तो अलग वस्तु है।

एडजस्टमेन्ट रखे दखल से मुक्त

संसार का अर्थ ही समसरण मार्ग, इसलिए निरंतर परिवर्तन होता ही रहता है। जबकि ये बुज़ुर्ग पुराने ज़माने को ही पकड़े रहते हैं। अरे, ज़माने के साथ चल, वर्ना मार खाकर मर जाएगा! ज़माने के अनुसार एडजस्टमेन्ट लेना चाहिए। मेरा तो चोर के साथ, जेबकतरे के साथ, सब के साथ एडजस्टमेन्ट होता है।

ये बुज़ुर्ग घर में घुसते ही कहते हैं, 'यह लोहे की अलमारी? यह रेडियो? यह ऐसा क्यों? वैसा क्यों?' ऐसे करते हैं। अरे, किसी जवान से दोस्ती कर। यह युग तो बदलता ही रहेगा। इनके बगैर ये जीएँ कैसे? कुछ नया देखा कि मोह होगा। नवीन नहीं होगा तो जीएँगे किस तरह? ऐसा नवीन तो अनंत बार आया और गया, उसमें आपको बखेड़ा नहीं करना चाहिए। आपको अनुकूल नहीं आए तो आप मत करो। यह आइस्क्रीम आपसे नहीं कहती है कि मुझ से दूर रहो। आपको नहीं खाना हो तो मत खाओ। लेकिन ये बुज़ुर्ग तो उस पर चिढ़ते रहते हैं। ये मतभेद तो युग परिवर्तन के हैं। ये बच्चे तो ज़माने के अनुसार चलेंगे। मोह अर्थात् नया-नया उत्पन्न होता है और नया-नया ही दिखाई देता है। हमने बचपन से ही बुद्धि से बहुत सोच लिया था कि यह संसार उल्टा हो रहा है या सीधा हो रहा है और यह भी समझ में आ गया कि, इस संसार को बदलने की किसी की सत्ता ही नहीं है। फिर भी हम क्या कहते हैं कि ज़माने के अनुसार एडजस्ट हो जाओ। लड़का जब नयी तरह की टोपी पहनकर आए, तब ऐसा मत कहना कि, 'ऐसी कहाँ से ले आया?' उसके बजाय एडजस्ट हो जाएँ कि, 'इतनी अच्छी टोपी कहाँ से लाया? कितने में लाया? बहुत सस्ती मिली?' इस प्रकार एडजस्ट हो जाना।

अपना धर्म क्या कहता है कि असुविधा में सुविधा देखो। रात में मुझे विचार आया कि, 'यह चद्दर मैली है।' लेकिन फिर एडजस्टमेन्ट ले लिया तो फिर इतनी मुलायम महसूस हुई कि न पूछो। पंचेन्द्रिय ज्ञान असुविधा दिखाता है और आत्मा सुविधा दिखाता है। इसलिए आत्मा में रहो।

सांसारिक ज्ञान से भी टल सकता है दखल

दो प्रकार के ज्ञान हैं। एक इन्द्रिय ज्ञान, दूसरा अतिन्द्रिय ज्ञान। इन्द्रिय ज्ञान सीमित है, अतीन्द्रिय ज्ञान असीमित है। लोगों को इन्द्रिय ज्ञान में भी, संसार में पूर्ण जागृति नहीं है। इन्द्रिय ज्ञान में यदि संपूर्ण जागृत हो चुका हो तो वह ज़बरदस्त संतपुरुष कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : इन्द्रिय ज्ञान में संपूर्ण जागृति मतलब क्या?

दादाश्री : पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, वह सब इन्द्रिय ज्ञान में आता है। इन्द्रिय ज्ञान की संपूर्ण जागृति में आ जाए तब उसका अहंकार कैसा होता है कि किसी के साथ उसका मतभेद नहीं पड़ता। इस तरह से हट जाता है कि यदि कोई मतभेद डालने जाए तब भी वह मतभेद नहीं होने देता। कहीं पर झगड़ा होने की जगह हो तो वहाँ वह मतभेद का निवारण कर देता है। इन्द्रिय ज्ञान की जागृति से किसी के साथ किंचित्मात्र टकराव नहीं होता, 'एवरीव्हेर एडजेस्टेबल' हो जाता है, सांसारिक दखल नहीं होता।

टकराव टालकर टालो दखल

आप गाड़ी में से उतरे और तुरंत कुलियों को बुलाया, 'ऐय... इधर आ, इधर आ !' वे दो-चार दौड़कर आते हैं। 'चल, उठा ले।' सामान उठाने के बाद, बाहर निकलकर कलह करो कि 'स्टेशन मास्टर को बुलाता हूँ, इतने पैसे लिए जाते होंगे? ऐसा है, वैसा है।' अरे, यहाँ पर मत टकराना। वह अगर पच्चीस रुपए कहे तो उसे पटाकर कहना कि 'भाई, वास्तव में दस रुपए होते हैं, लेकिन तू बीस ले ले, चल।' आप जानते हैं कि फँस गए हैं, इसलिए कम-ज़्यादा देकर निबटारा कर लेना है। वहाँ टकराव नहीं करना चाहिए, वर्ना वह बहुत चिढ़ जाएगा न, वह घर से ही चिढ़कर ही आया होता है, उस पर स्टेशन पर झिकझिक करेंगे तो यह तो भैंसे जैसा है। अभी चाकू मार देगा। तैंतीस मार्क्स पर मनुष्य बना, बत्तीस मार्क्स पर भैंसा बनता है।

यदि कोई आदमी लड़ने आए और शब्द बम के गोले जैसे आ रहे हों, तब आपको समझ लेना चाहिए कि टकराव टालना है। आपके मन पर बिल्कुल असर न हो, फिर भी कदाचित अचानक कोई असर हो जाए, तब समझना चाहिए कि सामने वाले के मन का असर हम पर पड़ा है तब हमें खिसक जाना चाहिए। यह सब टकराव है। इसे जैसे-जैसे समझते जाओगे, वैसे-वैसे टकराव टलते जाएँगे। टकराव टालने से मोक्ष होता है।

जगत् खड़ा है टकराव के कारण

यह जगत् टकराव ही है, स्पंदन स्वरूप है। इसलिए टकराव टालो। टकराव से यह जगत् निर्मित हुआ है। उसे भगवान ने 'बैर से बना है,' ऐसा कहा है। हर एक मनुष्य, अरे, जीवमात्र बैर रखता है। हद से ज़्यादा हुआ तो बैर रखे बगैर रहेगा नहीं। फिर चाहे वह साँप हो, बिच्छू हो, बैल हो, भैंसा हो या चाहे जो हो लेकिन बैर रखेगा क्योंकि सभी में आत्मा है। आत्मशक्ति सभी में एक समान है। कारण यह है कि, इस *पुद्गल* (शरीर) की कमज़ोरी को लेकर सहन करना पड़ता है लेकिन सहन करने के साथ वह बैर रखे बगैर रहता नहीं है। और अगले जन्म में वह उसका बैर वसूल करता है वापस।

इस जगत् का बेसमेन्ट बैर ही है। इमोशनल व्यवहार और आसक्ति से बीज डलते हैं, और

उससे जगत् खड़ा है। यह संसार तो घर के व्यक्तियों की वजह से ही है। आमने-सामने दोष ही देखते रहते हैं। घर में ही राग-द्वेष, क्लेश, झगड़े और दखलंदाज़ी से बैर करते हैं। अन्योन्य आमने-सामने गलतियाँ ही देखते रहते हैं और आमने-सामने एक-दूसरे को दोष देते हैं।

कोई व्यक्ति बहुत बोले तो उसके किसी भी तरह के बोल से हमें टकराव नहीं होना चाहिए। यही धर्म है। हाँ, बोल कैसे भी हों। परंतु बोल की क्या ऐसी शर्त होती है कि 'टकराव ही करना है'। ये लोग तो ऐसे हैं कि सुबह तक टकराव करें और अपनी वजह से सामने वाले को अड़चन हो, ऐसा बोलना सब से बड़ा गुनाह है। बल्कि अगर किसी ने ऐसा बोल दिया हो, फिर भी उसे टाल दे। वही मनुष्य कहलाएगा!

हमें शब्दों से दखलंदाज़ी नहीं करनी चाहिए। हमें संस्कार दिखाकर दखलंदाज़ी नहीं करनी चाहिए और शब्द तो ऐसे बोलने चाहिए कि सामने वाले को चोट न पहुँचे, तभी शब्द बोलने का अधिकार है। मेरे शब्द सामने वाले को चोट नहीं पहुँचाते इसलिए मैं बोलता हूँ।

स्याद्वाद वाणी क्या कहती है? आप ऐसा बोलो कि पाँच लोगों को लाभ हो और किसी को भी परेशानी न हो।

टकराव टालेगा तो पहुँचेगा मोक्ष में

'किसी से टकराव में मत आना और टकराव टालना'। हमारे इस वाक्य का यदि आराधन करेगा, तो ठेठ मोक्ष में पहुँचेगा। तेरी भक्ति और हमारा वचनबल सारा काम कर देगा। तेरी तैयारी चाहिए।

हमारे एक ही वाक्य का यदि कोई आराधन करेगा, तो ठेठ मोक्ष में जाएगा। अरे, हमारा एक शब्द जैसा है वैसा निगल जाए, तो भी मोक्ष हाथ में आ जाए ऐसा है लेकिन उसे जैसा है वैसा ही निगल लेना। उसे चबाने या मसलने मत लग जाना। तेरी बुद्धि काम नहीं आएगी। वह उल्टा घोटाला कर डालेगी।

दीवार जैसा समझकर टालो दखल

हम अगर दीवार से टकराएँ, तब दीवार की भूल है या हमारी भूल? दीवार से आप न्याय माँगो कि 'खिसक जा, खिसक जा' कहो तो? और आप यदि कहो कि मैं तो यहीं से जाऊँगा तो?' किसका सिर फूटेगा?

प्रश्नकर्ता : अपना।

दादाश्री : अर्थात् किसे सावधान रहना पड़ेगा? उसमें दीवार को क्या? उसमें दोष किसका? जिसे लगा उसका दोष। अर्थात् जगत् दीवार जैसा है।

दीवार से टकराओ, तो दीवार के साथ मतभेद होता है क्या? कभी दीवार या किवाड़ से आप टकरा गए, तो उस समय किवाड़ या दीवार के साथ मतभेद होता है?

प्रश्नकर्ता : यह किवाड़ तो निर्जीव वस्तु है न?

दादाश्री : अर्थात् जीवों के लिए ही आप ऐसा मानते हैं कि यह मुझ से टकराया। इस दुनिया में जो टकराती हैं, वे सारी निर्जीव वस्तुएँ होती हैं। जो टकराते हैं, वे जीवंत नहीं होते, जीवंत टकराते नहीं हैं। निर्जीव चीज़ टकराती है इसलिए आपको उसे दीवार जैसी ही समझ लेनी है, अर्थात् 'दखल नहीं करना है!'

समझो, नहीं है दखल किसी का आप में

अपना विज्ञान बिल्कुल साफ है। आप में

किसी का दखल नहीं है, ऐसा है यह जगत्। यह जो दखल दिखाई देता है, वह भ्रांति है। बाकी, अपना *ऊपरी* (बॉस) कोई भी नहीं है। तो फिर *ऊपरी* कौन? खुद के ब्लन्डर्स और मिस्टेक्स। खुद के स्वरूप का भान नहीं है, उसे ब्लन्डर्स कहते हैं। इसलिए अब सिर्फ मिस्टेक्स बाकी रहीं। अब भूल के परिणाम भुगतने बाकी रहे।

हम क्या कहना चाहते हैं? जो कुछ भी आ रहा है, वह आपका हिसाब है। उसे चुक जाने दो, और वापस नए सिरे से रकम उधार नहीं देना।

प्रश्नकर्ता : आप, 'नई रकम उधार देना' किसे कह रहे हैं?

दादाश्री : कोई अगर आपसे कुछ उल्टा कहे तो आपके मन में ऐसा लगे कि 'यह क्यों मुझ से उल्टा-सुल्टा कह रहा है।' तो तब आप उसे नई रकम उधार दे रहे हो। आपका जो हिसाब था, उसे चुकाते समय आपने फिर से नए हिसाब का बहीखाता शुरू किया। आपने एक गाली दी थी, वह जब उसे वापस देने आया तब आपको उसे जमा कर लेना चाहिए था उसके बजाय आपने नई पाँच दे दीं। यह एक तो सहन नहीं होती है, वहाँ दूसरी पाँच दे दीं! यों नई देता रहता है और फिर परेशान होता रहता है। इस तरह सारी उलझनें पैदा करता है। अब इसे मनुष्यों की बुद्धि (यहाँ तक का) कैसे समझ पाएगी?

अगर तुझे यह व्यापार न पुसाए तो वापस मत देना, नया उधार नहीं देना, और अगर पुसाता हो तो वापस पाँच दें।

दखल होता है खुद की भूल से

खुद की कुछ भूल रही होगी, तभी सामने वाला कह रहा होगा न? इसलिए भूल सुधार लो न! इस जगत् में कोई जीव किसी जीव को तकलीफ नहीं दे सकता, ऐसा स्वतंत्र है और यदि कोई तकलीफ देता है, तो इसलिए कि वह पहले दखल किया है। भूल खत्म कर लो, फिर हिसाब नहीं रहेगा।

प्रश्नकर्ता : यह थ्योरी ठीक से समझ में आ जाए तो मन को सभी प्रश्नों का समाधान रहेगा।

दादाश्री : समाधान नहीं, एक्ज़ेक्ट ऐसा ही है। यह सेट किया हुआ नहीं है, बुद्धिपूर्वक बात नहीं है, यह ज्ञानपूर्वक है।

खुद की ही भूल है, ऐसा यदि समझ में नहीं आए तो अगले जन्म का बीज डलता है। यह तो हम टोकते हैं, फिर भी यदि नहीं चेते तो क्या हो? और अपनी भूल नहीं हो तो अंदर ज़रा सा भी बखेड़ा नहीं होता। हम निर्मल दृष्टि से देखें तो जगत् निर्मल दिखाई देता है और हम टेढ़ा देखें तो जगत् टेढ़ा दिखाई देता है। इसलिए पहले खुद की दृष्टि निर्मल करो।

पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) को मत देखना, *पुद्गल* की ओर दृष्टि करना ही मत। आत्मा की ओर ही दृष्टि रखना। भगवान महावीर को जगत् में सभी निर्दोष दिखे थे। कान में कीलें मारने वाले भी निर्दोष दिखे। कोई दोषित है ही नहीं जगत् में। यदि कोई दोषित दिखाई दे रहा है तो, वह आपकी ही भूल है। वह एक प्रकार का आपका अहंकार है। यह तो हम बिना तनख्वाह के काज़ी बनते हैं, उसी की फिर मार खाते हैं।

निंदा करके करते हैं दखल

वीतराग क्या कहते हैं कि किसी भी मनुष्य का समझदारी वाला गुण हो तो उसे स्वीकार

लेना चाहिए। जबकि हिन्दू तो बहुत डेवेलप जाति है इसलिए तुरंत ही निंदा करती है कि ऐसा कैसे हो सकता है? तो ये लोग गुरु के भी न्यायधीश! निंदा में पड़ते हैं, उस बुद्धि को हटा न यहाँ से।

किसी व्यक्ति की निंदा नहीं करनी चाहिए। अरे, उनके बारे में थोड़ी बातचीत भी नहीं करनी चाहिए। उसमें से भयंकर दोष लगते हैं। उसमें भी यहाँ पर सत्संग में, परमहंस की सभा में तो किसी के बारे में थोड़ी सी भी बातचीत नहीं करनी चाहिए। थोड़ी सी भी उल्टी कल्पना से ज्ञान पर कितना भारी आवरण आ जाता है, तो फिर इन 'महात्माओं' की टीका, निंदा करें तो कितना भारी आवरण आ जाएगा? सत्संग में तो, दूध में चीनी घुल जाती है, वैसे घुल-मिल जाना चाहिए। यह बुद्धि ही अंदर दखल करती है। हम सब का सबकुछ जानते हैं फिर भी किसी के बारे में एक अक्षर भी नहीं बोलते। एक अक्षर भी उल्टा बोलने से ज्ञान पर बड़ा आवरण आ जाता है।

'यह मुझे धोखा दे गया' वैसा बोला, तो वह भयंकर कर्म बाँधता है। इससे तो दो धौल लगा दे तो कम कर्म बंधेगा। वह तो जब धोखा खाने का काल उत्पन्न होता है, आपके कर्म का उदय होता है तभी धोखा खा जाते हैं। उसमें सामने वाले का क्या दोष? उसने तो बल्कि हमारा कर्म खपा दिया। वह तो निमित्त है।

नहीं कर सकता दखल कोई किसी में

'मोक्ष में जाते हुए ये लोग हमें उलझाते हैं' हम जो ऐसा कहते हैं वह तो हम व्यवहार से कहते हैं। इस इन्द्रिय ज्ञान से जैसा दिखाई देता है वैसा बोलते हैं, लेकिन वास्तव में हकीकत में वैसा नहीं है। हकीकत में तो लोग उलझा ही नहीं सकते न! क्योंकि कोई जीव किसी जीव में किंचित्मात्र भी दखल कर ही नहीं सकता, ऐसा है यह जगत्। लोग तो बेचारे प्रकृति के अधीन हैं, प्रकृति जैसा नाच नचाती है उस अनुसार नाचते हैं, अतः उसमें किसी का दोष है ही नहीं। जगत् पूरा ही निर्दोष है। मुझे खुद को निर्दोष अनुभव में आता है। जब आपको वह निर्दोष अनुभव में आएगा तब आप इस जगत् से छूटोगे, नहीं तो कोई एक जीव भी दोषित लगेगा तब तक आप छूटोगे नहीं।

जगत् है आपकी ही दखल का प्रतिघोष

वर्ल्ड में कोई आप में दखल कर सके ऐसी स्थिति में है ही नहीं। इसलिए वर्ल्ड का दोष निकालना मत, आपका ही दोष है। आपने जितना दखल किया है उनके ही ये प्रतिघोष है। आपने दखल न किया हो, उसका प्रतिघोष आपको लगेगा नहीं।

मानो कि कोई बावड़ी है। उस बावड़ी में उतरकर कोई बोले कि 'तू चोर है,' तो बावड़ी क्या कहेगी? 'तू चोर है।' किसने कहा यह? यह जगत् भी प्रतिध्वनि ही है इसके अलावा कुछ नहीं है। मतलब आपका ही 'क्रिएशन' है यह। अगर आपको यह सुनना पसंद नहीं है कि 'तू चोर है' तो ऐसा बोलो 'तू राजा है'। तो फिर तू राजा है। आपका ही क्रिएशन है। किसी और की कोई दखलंदाज़ी नहीं है।

इसलिए एक मच्छर भी आपको छू नहीं सकता, यदि आप दखल न करो तो। इस बिस्तर में निरे खटमल हैं और वहाँ आपको सुलाएँ और यदि आप दखल बगैर के हो, तो एक भी खटमल आपको छुएगा नहीं। कौन-सा नियम होगा इसके पीछे? यह तो खटमल के लिए लोग विचार करने

वाले हैं न, कि 'अरे, चुन डालो, ऐसा करो, वैसा करो?' इस तरह दखल करते हैं न, सभी? और क्या दवाई छिड़कते हैं? हिटलरिज़म जैसा करते हैं? करते हैं क्या ऐसा? फिर भी खटमल कहते हैं, 'हमारे वंश का नाश नहीं होने वाला। हमारा वंश बढ़ता ही जाने वाला है।'

इसलिए यदि आपका दखलंदाज़ी बंद हो जाएगी तो सब साफ हो जाएगा। दखल नहीं हो तो कुछ काटे ऐसा नहीं है इस जगत् में। नहीं तो यह *डखोदखल* (दखलंदाज़ी) किसी को छोड़ता नहीं है।

भूल स्वीकार कर लेने से नहीं होगा दखल

आपके साथ मेरा कोई टकराव हो जाने के बाद अगर मैं कहूँ, 'चंदूभाई, मेरी भूलचूक हो तो माफ करना।' तो हल आ जाएगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : आ जाएगा।

दादाश्री : फिर आप छोड़ दोगे या नहीं लेकिन अगर फिर उसके बजाय मैं आपसे कहूँ कि, 'आप मेरी बात नहीं समझे।' अरे, मूर्ख है! तू क्या समझेगा, भला!' इतना समझ गए होते तो यह दखल ही नहीं होता न! नहीं समझे हैं तभी तो दखल हो रहा है। मतलब आप निकाल कर दो। उलझाओगे तो क्या होगा फिर? उलझ जाएगा यह सब। इसीलिए तो इस जगत् के सभी लोगों के उलझे हुए कर्म हैं न! उसका निबेड़ा लाओ न!

मान लो अगर कभी बेटे के प्रति आपसे कोई गलती हो गई, और बेटा है आप इसलिए उस भूल को स्वीकार नहीं करते कि 'बेटा है' तो फिर उससे क्या होगा? बेटा बैर तो रखेगा न मन में कि आप सही बात को भी नहीं मानते हैं। अगर आप कह देते कि, 'भाई, मुझ से, गलती हो गई।' कोई गलतफहमी हो गई थी, तो तुरंत हल आ जाएगा। इसमें कोई हर्ज है? भूल स्वीकार करने से क्या बेटा बाप बन जाएगा? बेटा, बेटा ही रहेगा न! लेकिन यदि आप भूल स्वीकार नहीं करोगे तो बेटा बाप बन जाएगा!

(यह तो) जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है न, वैसे-वैसे वह ऐसा समझता है कि मुझ से गलती नहीं हो सकती, बेटे से बहुत गलतियाँ होती हैं। उससे बहुत गलतियाँ होती हैं, लेकिन वह मानता है, 'मुझ से गलती नहीं होती', मानो मजिस्ट्रेट न हो। फिर बेटा भी कहता है कि 'आप में अक्ल नहीं हैं।' फिर भी वह मन में सोचता है कि 'बेटा छोटा है, इसमें समझ नहीं है।' अरे भाई, वह कह रहा है तो तौलकर तो देख! अपने में अक्ल है या नहीं वह तौलना! अगर वह कह रहा है कि 'आप में अक्ल नहीं है,' क्या तौलकर नहीं देखना चाहिए। ला तौलकर तो देखने दे। तब अगर सोचेगा तो पता चलेगा न कि बिल्कुल अक्ल नहीं है। अगर अक्ल होती तो ऐसा नहीं होता। जिसमें अक्ल होती है, उसके वहाँ क्लेश नहीं होते। जो अक्ल वाले हैं न, उनके यहाँ सभी शांति से खाते-पीते हैं। कम हो तो कम और ज़्यादा हो तो ज़्यादा, लेकिन क्लेश नहीं रहता। यहाँ कितने घर क्लेश रहित होंगे?

खुद जाकर करते हैं, वह है दखल

प्रश्नकर्ता : बच्चों के लिए क्या सही है और क्या गलत, वह समझ में नहीं आता।

दादाश्री : सामने चलकर जितना करते हैं वही ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंदी है, सिर्फ पाँच साल तक ही करना चाहिए। उसके बाद तो जब बच्चा कहे कि, 'पिता जी मुझे फीस दीजिए।'

तब आपको कहना है कि, 'भाई, पैसे कोई नल से नहीं आते। हमें दो दिन पहले से कह देना। हमें उधार लाने पड़ते हैं।' ऐसा कहकर दूसरे दिन देने चाहिए। बच्चे तो ऐसा समझ बैठते हैं जैसे नल में पानी आता है वैसे ही पिताजी भी पानी ही दे रहे हैं। इसलिए बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार रखना कि उनसे रिश्ता बना रहे और ज़्यादा सिर पर न चढ़ जाएँ, बिगड़ न जाएँ। ये तो बच्चों से इतना प्यार करते हैं कि बच्चे बिगड़ जाते हैं। कहीं अतिशय प्यार होना चाहिए? क्या बकरी पर प्यार आता है? बकरी और बच्चे में क्या फर्क है? दोनों में आत्मा है। अतिशय प्यार भी नहीं और नि:स्पृह भी नहीं हो जाना है। बच्चों से कहना है कि, 'कुछ काम हो तो बताना। जब तक मैं हूँ, तब तक अगर कोई अड़चन हो तो बताना।' अड़चन हो तभी, वर्ना दखल नहीं करना है। ये तो, अगर बच्चे की जेब से पैसे गिर रहे हों तो बाप शोर मचा देता है, 'ऐय! ऐय....' हम क्यों शोर मचाएँ? जब पूछेगा तब अपने आप ही पता चलेगा, उसमें आपको कलह करने की क्या ज़रूरत है? अगर आप नहीं होते तो क्या होता? 'व्यवस्थित' के ताबे में है और व्यर्थ ही हस्तक्षेप करते हैं। संडास (गलन) भी व्यवस्थित के ताबे में है और जो आपका है वह आपके पास है। जब खुद अपने स्वरूप में रहे, तब वहाँ पर पुरुषार्थ है और खुद की स्व-सत्ता है। इस *पुद्गल* में पुरुषार्थ है ही नहीं। *पुद्गल* प्रकृति के अधीन है।

कहना नहीं आता, इसलिए हो जाता है दखल

बच्चों का अहंकार जागृत हो जाए, उसके बाद उन्हें कुछ नहीं कहना चाहिए, और हम क्यों कहें? ठोकर लगेगी तो सीख जाएँगे। बच्चे पाँच साल के हो जाएँ, तब तक कहने की छूट है। और पाँच से सोलह साल वाले को शायद दो चपत लगानी भी पड़े। लेकिन बीस साल का युवक हो जाने के बाद उसे कुछ भी नहीं कहना चाहिए, एक अक्षर भी नहीं कहना चाहिए। कुछ भी कहना गुनाह कहा जाएगा। वर्ना कभी बंदूक मार देगा।

घर में किसी से कुछ कहना, वही अहंकार का सब से बड़ा रोग है। सभी अपने-अपने हिसाब लेकर ही आए हैं! हर एक की दाढ़ी उगती है, आपको किसी से कहना नहीं पड़ता कि 'दाढ़ी क्यों नहीं उगाता?' वह तो उसकी उगेगी ही। सब अपनी-अपनी आँखों से देखते हैं, अपने-अपने कानों से सुनते हैं! दखल करने की क्या ज़रूरत है? एक अक्षर भी मत कहना। इसीलिए तो हम यह व्यवस्थित' का ज्ञान देते हैं। अव्यवस्थित कभी भी होता ही नहीं है। जो अव्यवस्थित दिख रहा है वह भी 'व्यवस्थित' ही है, अत: बात को सिर्फ समझना ही है।

प्रश्नकर्ता : बच्चे उनकी ज़िम्मेदारी समझकर नहीं रहते हैं।

दादाश्री : ज़िम्मेदारी 'व्यवस्थित' की है, वह तो उसकी ज़िम्मेदारी समझता ही है। आपको उसे कहना नहीं आता है, इसीलिए गड़बड़ होती है। सामने वाला माने, तब हमारा कहा हुआ काम का। ये माँ-बाप तो पागल जैसे बोलते हैं, फिर बच्चे भी पागलपन ही करेंगे न!

जगत् टोके बिना रहता ही नहीं है लेकिन टोकना नहीं चाहिए। ऐसा है कि जगत् टोके बिना भी सुंदर चलेगा। यह जगत् किसी भी तरह की दखलंदाज़ी करने जैसी नहीं है। जगत् तो सिर्फ 'जानने' योग्य ही है।

कुछ बात-चीत करना। खुलासा मिलना

चाहिए न! ऐसा कब तक चलने देंगे? बेटा बड़ा हो जाए और उससे मतभेद हो जाए तो पूरी रात नींद नहीं आती अपने ही बेटे की वजह से नींद नहीं आई। देखो न!

देह के कारण है आगे का दखल

(बच्चे को) अगर आप एक घंटे तक डाँटो न! 'नालायक, बदमाश, चोर' यों उसे डाँटोगे तो? एक घंटे तक मारकर तो देखो! मारेंगे तो क्या कहेगा?

प्रश्नकर्ता : डाँटने से विरुद्ध हो जाते हैं।

दादाश्री : विरुद्ध होने पर मारने लगेंगे। तब वे आपके बच्चे कैसे कहलाएँगे? बच्चे तो उन्हें कहेंगे कि मार-मारकर उनकी हालत खराब कर दें, तब भी कहेंगे, 'पिताजी, आप करें वैसा। आपका ही है यह सब।' उन्हें बच्चे कहेंगे! क्या वे ऐसे हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं हैं। राम और सीता के समय में रहे होंगे।

दादाश्री : राम के समय में भी नहीं थे। यह शरीर ही अपना नहीं है तो ये बच्चे कैसे अपने होंगे? यह शरीर क्या खुद का अपना शरीर अपना है?

प्रश्नकर्ता : नहीं है।

दादाश्री : रात-दिन ब्रश करते हैं फिर भी दाढ़ दर्द करती है न और फिर रात को सोने नहीं देती। अत: अपनी देह तो दगा है। अब यह देह है इसलिए आगे का दखल खड़ा हो गया है।

जहाँ ऋणानुबंध, वहाँ क्या दखल?

ये तो नाव (संसार सागर) में इकट्ठे हुए लोग हैं, जब उनका किनारा आएगा तब वे तो उतर पड़ेंगे जबकि यह तो कहेगा कि, 'मुझे उसके बगैर नहीं चलेगा।' 'उसके बगैर नहीं चलेगा,' ऐसा कैसे चलेगा? यह तो ऋणानुबंध है। ऐसा तो कब तक चलेगा? यह क्या दखल? नहीं लेना, नहीं देना। चुटकीभर खाना और पूरे गाँव को सिर पर लेकर फिरना और पैर दु:खे तो कोई देखने भी नहीं आता। अकेले अपने आप ही सहलाते रहना पड़ता है।

एडजस्टमेन्ट लेने से टलता है दखल

प्रश्नकर्ता : दादा, आप पूरे दिन काम करके आए हों और शाम का खाना न मिले, जोरदार भूख लगी हो तो क्या करेंगे आप?

दादाश्री : 'भुगते उसी की भूल।'

प्रश्नकर्ता : दोनों तरफ से मार पड़ती है न!

दादाश्री : दोनों तरफ से मार ही है। पूरा जगत् गलत है। आपका हिसाब आकर हाज़िर हो जाएगा। आप मना करोगे तो भी टेबल पर आएगा। आप कहो कि, 'ये सब मत बनाना,' फिर भी वह हाज़िर होता रहेगा। मेरे लिए कितनी चीज़ें हाज़िर हो जाती हैं तब मुझे भी मना करते रहना पड़ता है। वह कहेगा 'रस लेकर आऊँ, आम ले आऊँ!' 'अरे भाई, मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है!' कितनी चीज़ें हाज़िर कर देते हैं, उसमें भी, मुझे तो ज़रूरत नहीं होती। मेरे लिए कौन सी चीज़ें हाज़िर नहीं करते होंगे लोग? आपको क्या लगता है? खाना खाते समय, हर समय लोग क्या हाज़िर नहीं करते होंगे? लेकिन हमें किसी भी तरह की ज़रूरत नहीं है और तिरस्कार भी नहीं है। अगर आपने रखा तो ज़रा सा टुकड़ा ले लेते हैं। आपके बहुत कहने पर अगर नहीं खाना हो तो भी ज़रा सा टुकड़ा ले लेते हैं। आप अगर कड़वी चीज़ दो तो भी पी लेते हैं, ज़रा सा पी लेते हैं। हमें तो एडजस्ट हो जाना चाहिए।

दखल बंद, तो रहेगी भगवान की सत्ता

यह जगत् 'रिलेटिव' है, व्यवहारिक है। हमें सामने वाले से एक अक्षर भी नहीं कहना चाहिए। और यदि 'परम विनय' में हों तो कमियाँ भी नहीं निकालनी चाहिए। इस जगत् में किसी की कमियाँ निकालने जैसा नहीं है। 'कमी निकालने से कैसा दोष लगेगा', कमी निकालने वाले को उसका पता नहीं है।

मनुष्य होकर संसार में दखल न करे तो घर संसार इतना सीधा और सरल चलता रहेगा! लेकिन वह प्राप्त संसार में दखल ही करता रहता है। जागे तभी से दखल। प्राप्त संयोगों में अगर ज़रा सा भी दखल न हो, तो भगवान की सत्ता रहेगी। उसके बजाय दखल करके खुद की सत्ता लाता है। 'हं, फिर यह ऐसा क्यों किया, यह ऐसा....' अरे भाई, सीधा रह न। चाय पी ले न चुपचाप मुँह धोकर।

और पत्नी भी जब से जागती है तभी से दखल करती रहती है कि, 'बच्चे को ज़रा झूला भी नहीं झुला रहे, देखो वह कब से रो रहा है!' तब फिर पति कहेगा, 'तेरे पेट से बाहर निकला है तो तुझे रखना चाहिए।' वह सीधी तरह से न रहे तो पति क्या करेगा?

सीखो कहने का तरीका

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि दखल मत करो, तो क्या सब जैसा है वैसा पड़े रहने देना चाहिए? घर में बहुत से लोग रहते हैं।

दादाश्री : पड़े भी नहीं रहने देना चाहिए और दखल भी नहीं करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कैसे हो सकता है?

दादाश्री : भला दखल होता होगा? दखल तो अहंकार का पागलपन है!

प्रश्नकर्ता : घर में अगर कुछ काम हो तो क्या ऐसा कह सकते हैं कि 'इतना कर लेना?'

दादाश्री : लेकिन कहने-कहने में फर्क होता है।

प्रश्नकर्ता : बिना इमोशन के कहना है? इमोशनल हुए बिना कहना है, ऐसा?

दादाश्री : यों तो वाणी, कितनी मीठी बोलता है कि कहने से पहले ही कोई समझ जाए!

प्रश्नकर्ता : कठोर वाणी, कर्कश वाणी हो तो उसका क्या करें?

दादाश्री : कर्कश वाणी, तो फिर वही दखल है न! कर्कश वाणी में शब्द जोड़ना पड़ेगा कि, 'मैं विनती कर रहा हूँ इतना कर लेना।' 'मैं विनती....' इतना शब्द जोड़कर कहना है।

प्रश्नकर्ता : अब हम ज़ोर से ऐसा कहें कि, 'ऐय! यह थाली यहाँ से उठा ले' और हम धीरे से कहे, 'तू यहाँ से थाली उठा ले।' तो वह जो कहने का प्रेशर है....

दादाश्री : उसे दखल नहीं कहते। अगर उस पर रौब मारो तो दखल कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी धीरे से कहना है?

दादाश्री : नहीं! धीरे से कहोगे तो चलेगा। लेकिन धीरे से कहने में भी दखल कर देता है। अत: आपको कहना है, 'मैं विनती कर रहा हूँ, इतना कर लेना न।' उसमें शब्द जोड़ना पड़ेगा।

अपने दखल से ही है सारा फँसाव

वर्ल्ड में कोई भी तुझे नहीं फँसा सकता।

तू ही वर्ल्ड का मालिक है, तेरा कोई *ऊपरी* नहीं है। सिर्फ खुदा ही तेरे *ऊपरी* हैं, लेकिन अगर तू खुद को पहचान ले न, तो फिर तेरा *ऊपरी* कोई रहेगा ही नहीं। फिर कौन फँसाएगा वर्ल्ड में! कोई अपने पर उँगली उठाए, ऐसा नहीं है लेकिन देखो न, यह तो कितना फँसाव हो गया है! जहाँ-तहाँ फँसाव ही है न! ऐसा फँसाव वाला है यह जगत् लेकिन यह जगत् कब तक फँसाएगा? यदि हमने बहीखाते में कोई दखल किया होगा तभी फँसाएगा। हमारे बहीखाते में अगर कोई दखल नहीं होगा तो कोई नहीं फँसाएगा, कोई नाम नहीं देगा।

जिसने किंचित्मात्र भी दखलंदाज़ी नहीं की है, तो कोई किंचित्मात्र भी उसका नाम नहीं दे सकता। किंचित्मात्र भी दखल नहीं देने वाला अगर लुटेरों के किसी गाँव में जा पहुँचे तो लुटेरे उसे 'साहब, साहब' करके भोजन करवाएँगे! उसके पास चाहे कितने भी हीरे क्यों न हों, फिर भी वे उन्हें छू तक नहीं पाएँगे जबकि कोई और अगर दस पुलिसवालों को साथ लेकर गया होगा तो भी उसे लूट लेंगे।

इस प्रकार यों किसी को कुछ भी करने की सत्ता है ही नहीं। इस दुनिया में घबराने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। आप मालिक ही हो। खुद अपने आपके आप मालिक ही हो और ये जो आपको परेशानी आती हैं, वह सारा आपका ही हिसाब है। आपने जो उलझाया है, उस उलझन का फल आया है। आपने उलझाया हो तो उसका फल आएगा या नहीं आएगा? फिर उसमें और किसी का क्या गुनाह? अत: हमें वह फल शांतिपूर्वक भुगत लेना चाहिए और फिर से ऐसे नहीं उलझाएँ, उतना देख लेना चाहिए। वर्ना अपने में किसी का दखल नहीं है, भगवान का भी दखल नहीं है। जेबकतरे का भी दखल नहीं है। जो जेब काटता है, वह तो अपना हिसाब चुका रहा है।

खुद के ही दखल के हैं परिणाम सारे

अगर किसी का इकलौता बेटा मर जाए, तो भी न्याय ही है। इसमें किसी ने अन्याय नहीं किया। इसमें भगवान का, किसी का अन्याय है ही नहीं, न्याय ही है इसलिए हम कहते हैं न कि 'जगत् न्याय स्वरूप है। निरंतर न्याय स्वरूप में ही है।'

किसी का इकलौता बेटा मर जाए, तब सिर्फ उसके घर वाले ही रोते हैं। दूसरे आसपास वाले क्यों नहीं रोते? वे घर वाले खुद के स्वार्थ से रोते हैं। यदि सनातन वस्तु में (खुद के आत्म स्वरूप में) आ जाए तो यह कुदरत न्यायी ही है।

इन सब बातों का ताल मेल बैठता है? ताल मेल बैठे तो समझना कि बात सही है। ज्ञान सेट करें तो कितने दु:ख कम हो जाएँगे!

और एक सेकन्ड के लिए भी न्याय में फर्क नहीं होता। यदि अन्यायी होता तो कोई मोक्ष में जाता ही नहीं। ये तो कहते हैं कि अच्छे लोगों को परेशानियाँ क्यों आती हैं? लेकिन लोग, ऐसी कोई परेशानी पैदा नहीं कर सकते हैं क्योंकि खुद यदि किसी बात में दखल नहीं करे तो कोई ताकत ऐसी नहीं है कि जो आपका नाम दे सके। खुद ने दखल किया है इसलिए यह सब खड़ा हो गया है।

अपने ही दखल से हमें अंतराय

यह तो सारे अंतराय हैं, वर्ना आप तो पूरे ब्रह्मांड के मालिक हो। तब कहते हैं, 'अनुभव

क्यों नहीं है?' सारे अतंराय छूट गए तो आप मालिक तो हो ही। अतंराय किसने खड़े किए? भगवान महावीर ने? तब कहते हैं, नहीं, खुद तूने ही, 'यू आर होल एन्ड सोल रिस्पोन्सिबल फॉर योर लाइफ।' खुद आपने ही खडे किए हैं। ज़रा सूक्ष्मता (गहराई) से नहीं चलेंगे तो फिर आपका गुज़ारा कैसे होगा? यहाँ पर अतंराय कहते हैं कि 'सूक्ष्मता का हिसाब सेट कर लो। इस भाई को स्थूल सेट नहीं होगा,' कहेंगे। अरे! अनंत शक्ति वाला तू, तुझे ऐसा दखल करने का सोचने की ज़रूरत ही क्या है? जिस तरह चल रहा है उसे इज़िली (सरलता से) देखता रह न, चुपचाप! 'मैं क्या करूँगा,' कहेगा। वहाँ पैसे कम पड़ गए तो लॉज में कैसे जाऊँगा। अरे, घनचक्कर! ऐसा नहीं कहना चाहिए। सबकुछ तैयार ही है आगे। ऐसा कहना, वही उसके अंतराय। और फिर वह उसे फल नहीं देंगे क्या? खुद ही अंतराय डालने वाला है।

हम एक अक्षर भी नहीं बोलते। हमें अंतराय भी नहीं होते। हम निर्‌अंतराय पद में हैं। जहाँ हम बैठे हों, वहीं सारी चीज़ें हाज़िर हो जाती हैं। जबकि हमने उस चीज़ के बारे में सोचा भी नहीं है, फिर भी हाज़िर हो जाती है। आपको ऐसा क्यों नहीं होता? तब कहते हैं, 'अतंराय डाले हैं। यह मुझे पता नहीं है, यह मुझ से ऐसा नहीं होगा।' तब वह चीज़ क्या कहती है? 'तुझे पता नहीं है, मूर्ख यों ही बैठा रह। मेरा अपमान क्यों कर रहा है?' ये सारी चीज़ें हैं न, वे मिश्रचेतन हैं। यह लकड़ा भी मिश्रचेतन का बना हुआ है। यानी *पुद्‌गल* (जो पूरण और गलन होता है) में आता है। यह परमाणु नहीं है। यह तो *पुद्‌गल* है। उसके साथ भी आप अगर द्वेष करोगे तो उसका भी फल आपको मिलेगा। 'यह फर्निचर मुझे अच्छा नहीं लगा।' तब फर्निचर कहेगा, 'तेरे और मेरे अंतराय।' फिर से वह फर्निचर नहीं मिलेगा, ऐसा नियम है। लोगों ने ही ऐसे अंतराय डाले हैं।

यह अपने ही खड़े किए हुए अंतराय हैं हर जगह। हर शब्द पर अंतराय डालता है। बिल्कुल नेगेटिव कहने से अतंराय डलते हैं और पॉज़िटिव से अंतराय नहीं डलते हैं।

दूसरे में दखल से डलते हैं अतंराय

राजा अगर किसी पर खुश हो जाए तो कोषाध्यक्ष से कहेगा कि, 'इसे एक हज़ार रुपये दे देना।' तब वह कोषाध्यक्ष सौ देता है। कुछ जगहों पर तो कोषाध्यक्ष ठाकुर को समझा देता है कि, 'इस व्यक्ति में कुछ है ही नहीं, यह तो सब गलत है।' जो देने को तैयार है, उसे रोकता है। तब उसका फल अगले जन्म में क्या आएगा? उसे कभी भी पैसा मिलेगा ही नहीं, लाभांतराय आ जाएगा। अगर किसी के लाभ में रुकावट डालने से लाभांतराय पड़ जाता है। इसी प्रकार जिस-जिस में आप रुकावट डालते हो, किसी के सुख में रुकावट डालते हो, किसी के विषय सुख में रुकावट डालते हो, जिस किसी चीज़ में आप रुकावट डालते हो तो उन सभी में आपको रुकावट आएगी और तब क्या कहोगे कि, 'मुझे अंतराय कर्म बाधक है।' कोई सत्संग में आने के लिए तैयार हो और आप मना करो, तो आपको अंतराय डलेंगे। यानी जिसमें आप रुकावट डालोगे उसका फल आपको भुगतना पड़ेगा। कुछ कोषाध्यक्ष तो ऐसे अक्लमंद होते हैं कि राजा को बख्शीश ही नहीं देने देता। क्या राजा को ऐसी सलाह देनी चाहिए? फिर क्या होता है? उसने अंतराय डाले, इसलिए उसी को अंतराय डल जाते हैं, फिर उसे किसी जगह पर लाभ ही नहीं होता। कुछ लोग

तो, कोई किसी गरीब आदमी को कुछ दे रहा हो तो उससे पहले ही वह अंतराय डाल देता है। अरे, उसमें क्यों दखल करते हो?

आपके वहाँ बिरादरी में सब लोग भोजन करने बैठे हो, उनमें से एक व्यक्ति कहे कि, 'इन चार-पाँच लोगों को भोजन के लिए बिठा दो,' और यदि आप मना करते हो न, तो वह आप भोजन के अंतराय डालते हो। उसके बाद किसी जगह पर ऐसी मुश्किल में, सचमुच में मुश्किल में आ जाते हो। दूसरों में दखल किया, तभी गड़बड़ हुई न! यानी हमें इतना समझना चाहिए कि, अंतराय कर्म किसलिए आते हैं? यदि जान लें तो फिर से ऐसा नहीं करेंगे न? ये सब आपकी ही डाली हुई रुकावटें हैं। जो है वह आपकी ही ज़िम्मेदारी पर किया हुआ है। खुद की ही ज़िम्मेदारी पर करना है, इसलिए समझ-बूझकर करना।

खुद के दखल करने के परिणाम कैसे

प्रश्नकर्ता : जो कार्य करते हैं उसमें विरोधी शक्ति आती है और उस कार्य को रोकती है, तो ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : जो हमें सही कार्य करने में रुकावट डालता है, उसे 'अंतराय कर्म' कहते हैं। ऐसा है, अगर बाग़ में जाते-जाते ऊब जाए न, तो एक दिन मैं कह देता हूँ कि, 'इस बाग़ में कभी भी आने जैसा है ही नहीं।' और हमें यदि वहाँ पर जाना हो न, तो हमारा ही किया हुआ अंतराय वापस सामने आएगा, तो उस बाग़ में नहीं जा पाएँगे। ये जितने भी अंतराय हैं, वे सब अपने ही खड़े किए हुए हैं। बीच में और किसी का दखल नहीं है। किसी जीव में किसी जीव का दखल है ही नहीं, खुद के ही दखलों से यह सब खड़ा हो गया है। हम बोले हो कि, 'इस बाग़ में आने जैसा है ही नहीं।' अब फिर वापस वहाँ जाना हो, उस दिन फिर हमारा जाने का मन ही नहीं करेगा, बाग़ के फाटक तक जाकर वापस आना पड़ेगा। इसी को कहते हैं अंतराय कर्म! दखल किया कि अंतराय डला।

जगत् में, सिद्धांत स्वतंत्रता का!

आपके सामने ज़रूरत का सभी कुछ तैयार ही रहता है क्योंकि भीतर परमात्मा बैठे हुए हैं पर यदि मन-वचन-काया की दखलंदाज़ी न हो तो!

संसार में क्या सुख है? खुद का परमात्म सुख बरते ऐसा है। कोई दखल कर ही नहीं सके ऐसी सच्ची आज़ादी मिल सके वैसा है। जो भी दखल आता है, वह किए हुए दखल का परिणाम है।

इसलिए मैंने कहा है कि 'इस जगत् में कोई जीव किसी जीव में दखल कर सके, ऐसा है ही नहीं। बिल्कुल स्वतंत्र है।' भगवान भी दखल नहीं कर सकते इतनी अधिक स्वतंत्रता है। भगवान क्यों दखल करेंगे? भगवान तो ज्ञाता-दृष्टा और परमानंदी हैं, उन्हें ऐसा कोई झंझट है? इतना समझ ले, तब भी बहुत हो गया कि कोई जीव किसी जीव में किंचित्मात्र दखल कर सके, यह जगत् ऐसा नहीं है। इस पर से यदि पूरा सिद्धांत समझ जाए तो स्वतंत्र हो जाएगा।

ऐसा विचित्र है यह काल। मनुष्य बेचारे बिदके हुए घोड़ों जैसे हैं। घबराहट बैठ गई है कि 'क्या होगा, क्या होगा?' तेरा कोई बाप भी *ऊपरी* नहीं है, वहाँ क्या हो जाएगा फिर? इतनी हिम्मत देने वाला कोई मिले, तो भी हिम्मत आ जाएगी न? मैंने तो क्या कहा है कि तेरा *ऊपरी* कोई नहीं है। तुझमें दखल करने वाला भी कोई नहीं है, और यह परमानेन्ट बात डिसाइडेडपूर्वक कह रहा हूँ।

दखलों से ही बंधे हुए हैं

भगवान तो आपका स्वरूप है। आपका कोई बाप भी *ऊपरी* नहीं है। आपको कोई कुछ करने वाला है ही नहीं। आप स्वतंत्र ही हो, सिर्फ अपनी भूलों के कारण आप बंधे हुए हो।

आपका कोई *ऊपरी* नहीं है और आप में किसी जीव का दखल (हस्तक्षेप) भी नहीं है। इतने सारे जीव हैं, लेकिन किसी जीव का आप में दखल नहीं है। और ये लोग जो कुछ दखल करते हैं, तो वह आपकी भूल की वजह से दखल करते हैं। आपने जो (पूर्व में) दखल किया था, यह उसी का फल है। मैं खुद 'देखकर' यह बता रहा हूँ।

हम इन दो वाक्यों में गारन्टी देते हैं, इससे मनुष्य मुक्त रह सकता है। हम क्या कहते हैं कि,

'तेरा *ऊपरी* दुनिया में कोई नहीं। तेरे *ऊपरी* तेरे ब्लंडर्स और तेरी मिस्टेक्स हैं। ये दो नहीं हों तो तू परमात्मा ही है।'

और 'तेरे में किसी का ज़रा भी दखल नहीं है। कोई जीव ऐसी स्थिति में है ही नहीं कि किसी जीव में किंचित्मात्र भी दखल कर सके, ऐसा है यह जगत्।'

ये दो वाक्य सब समाधान ला देते हैं।

हम ब्रह्मांड के मालिक हैं (आत्म स्वरूप की दृष्टि से)। इसलिए किसी जीव में दखलंदाज़ी नहीं करनी चाहिए। हो सके तो हेल्प करो और न हो सके तो कोई हर्ज नहीं लेकिन किसी में दखलंदाज़ी होनी ही नहीं चाहिए। सामने वाला यदि दखलंदाज़ी करे तो हमें सहन कर लेना चाहिए।

दखलंदाज़ी हो जाए, तो करना प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : कुछ परिस्थितियों में जो दखलंदाज़ी हो जाती है या सेन्सिटिव(संवेदनशील) हो जाते हैं, तो उसे रोकने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : प्रतिक्रमण और पछतावा करना है और भावना करनी चाहिए कि ऐसा नहीं होना चाहिए और ऐसा होना चाहिए। अपनी उस पुस्तक (भावना से सुधरें...) की नौ कलमें जिन्हें आ गई, उनका कल्याण हो गया!

हम दखलंदाज़ी करते हैं, कठोर शब्द बोलते हैं तो ऐसा जान-बूझकर बोलते हैं लेकिन कुदरत में तो हमारी भूल हुई ही हैं न! तो हम उसका प्रतिक्रमण करवाते हैं। हर एक भूल का प्रतिक्रमण होता है। सामने वाले का मन टूट न जाए, हमारा ऐसा होता है।

प्रश्नकर्ता : मुझे तो आपकी एक बात पसंद आई थी, आपने कहा था, कि 'दोष होने से पहले ही हमारे प्रतिक्रमण हो जाते हैं।'

दादाश्री : हाँ, यह प्रतिक्रमण 'शूट ऑन साइट' होते हैं। दोष होने से पहले ही शुरू हो जाते हैं अपने आप। हमें पता भी नहीं चलता कि कहाँ से आ गया! क्योंकि वह जागृति का फल है। और संपूर्ण जागृति, वही है केवलज्ञान। और क्या? जागृति ही मुख्य चीज़ है।

हमने अभी इन संघपति का अतिक्रमण किया, उनके लिए हमारा प्रतिक्रमण भी हो गया। हमारा प्रतिक्रमण साथ ही साथ हो जाता है हम बोलेंगे भी हैं और प्रतिक्रमण भी करते जाते हैं। बोलेंगे नहीं तो गाड़ी नहीं चलेगी।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमारे साथ भी कई बार

ऐसा होता है, कि बोल रहे होते हैं और प्रतिक्रमण होता रहता है लेकिन जिस तरह से आप करते हैं और जैसे हम करते हैं, उसमें हमें अंतर लगता है।

दादाश्री : हमारा तो कितना अलग है? सफेद बाल और बिल्कुल मुलायम काले बाल, कितना फर्क?

प्रश्नकर्ता : आप बताइए कि आप प्रतिक्रमण किस प्रकार करते हैं?

दादाश्री : उसका तरीका नहीं मिल पाएगा। ज्ञान हो जाने के बाद, बुद्धि चली जाने के बाद ऐसा होगा। तब तक वह तरीका खोजना भी नहीं है। आपको अपने तरीके से आगे बढ़ना है। जितना बढ़ पाए, उतना ठीक है।

प्रश्नकर्ता : हमें खोजना नहीं है, जानना ही है, दादा।

दादाश्री : नहीं। लेकिन उस तरीके का पता ही नहीं चलेगा। जहाँ साफ हो चुका है, 'क्लियर' ही हो चुका है, वहाँ और क्या करना होता है? एक तरफ भूल होती जाती है और दूसरी तरफ धुलती जाती है। जहाँ अन्य कोई दखल ही नहीं है। यह सब 'अन्क्लियर', सब मिट्टी के ढेर पड़े हों व ईंटों के टुकड़े पड़े हों, तो ऐसा तो चलेगा ही नहीं न! फिर भी रास्ते पर धूल दिखाई देने लगी है अत: हमें समझ जाना है कि अब पहुँचने वाले हैं। आपको दिखने लगा है, फिर क्या हर्ज है?

दखल रहित स्थिति ज्ञानी की

अभी मेरे साथ अपने सत्संग से संबंधित या अन्य किसी चीज़ से संबंधित अंदर लंबी-चौड़ी बात लेकर आए हो, तो भले ही डेढ़ घंटे तक चले लेकिन हमें उसमें कोई *दखोडखल* नहीं रहती न! जबकि दूसरी जगह पर ऐसा हो जाता है तब मतभेद भी हो जाते हैं। सौ घंटों का काम एक घंटे में कर देते हैं, लेकिन दखलंदाज़ी नहीं होती न!

'हम' तो मूलत: बिना दखल के इंसान। हम यदि बिना दखल के हो जाएँ तब यदि सामने सभी दखल वाले बैठे हों तब भी हम पर क्या असर हो सकता है? 'हमारी' उपस्थिति से ही सारा दखल चला जाता है। 'जिनका' मुकाम ही 'आत्मा' में है, 'उन्हें' कैसी परेशानी? जिनका मुकाम ही 'आत्मा' में है, 'उन्हें' व्यवहार बाधक नहीं है।

दखोडखल दूर करने के लिए दादा की *दखोडखल*

यह अभी हम जो *दखोडखल* करते हैं, वह आपकी *दखोडखल* निकालने के लिए हैं। फिर अगर किसी को ऐसा लगे कि दादा खुद ही *दखोडखल* (दखलंदाज़ी) करते हैं तो उसे अभी तक समझ में नहीं आया है। वे दादा, तुम्हारी *दखोडखल* दूर करने के लिए कर रहे हैं। वे अपनी *दखोडखल* निकालकर आराम से बैठे हैं और तेरी निकाल देते हैं। डाँटकर नहीं, हँसा-हँसाकर। जैसे हँसाने की शर्त न लगाई हो हमने! यह तो ज्ञानीपुरुष आपकी दखल वगैरह, सारी बंद कर देते हैं और हँसा-हँसाकर आगे ले जाते हैं।

- जय सच्चिदानंद

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

22-26 अक्तूबर : महाराष्ट्र के पूना शहर में पूज्य श्री का सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्य श्री द्वारा 'व्यापार में सही-गलत' और 'मैं करूँ, मैं करूँ वही अज्ञानता' टॉपिक पर सत्संग हुआ था। पूज्य श्री द्वारा मराठी भाषा में प्रत्यक्ष में जवाब सुनकर मराठी भाषी मुमुक्षु आनंदित हो उठे। WMHT, MMHT और मुमुक्षु-महात्माओं के लिए आप्तपुत्री व आप्तपुत्र सत्संग आयोजित हुआ। ज्ञानविधि में 1200 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग के दौरान 300 महात्माओं को पूज्य श्री के दर्शन व मॉर्निंग वॉक का लाभ प्राप्त हुआ। पूज्य श्री द्वारा मराठी भाषा में सात नई पुस्तिकाओं का विमोचन हुआ। आप्तपुत्र के फॉलोअप सत्संग में लगभग 200 महात्मा ज्ञान की अधिक समझ प्राप्त करने के लिए आए थें।

30-31 अक्तूबर : अडालज त्रिमंदिर के संकुल में दिवाली के दिन शाम को पूज्य श्री का विशेष प्रश्नोत्तरी सत्संग व रात को मंदिर के पोडियम में विशेष भक्ति का कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें पूज्य श्री द्वारा भी भक्तिपद गाया गया था। नए साल के दिन त्रिमंदिर में सवेरे सभी भगवंतो के पूजन व दर्शन के बाद दादा और नीरू माँ को अन्नकूट प्रसाद अर्पण हुआ। उसके बाद स्वामी और दादा की आरती हुई। ब्रेक के बाद नए साल के निमित्त से पूज्य श्री ने संदेश देते हुए कहा कि 'सामनेवाले के अनुकूल होकर फाइलों का समभाव से निकाल करना।' नए साल के दिन 8 हज़ार से भी ज़्यादा महात्माओं और दर्शनार्थियों को पूज्य श्री के दर्शन हुए। सन् 2017 के केलैन्डर का उद्घाटन धनतेरस के दिन हुआ।

4 नवम्बर : सुरत शहर के वराछा रोड पर पूज्य श्री द्वारा दादा भगवान परिवार के नए सेन्टर 'दादा दर्शन' का उद्घाटन हुआ। पूज्य श्री द्वारा यहाँ पर विराजित श्री सीमंधर स्वामी, श्री कृष्ण भगवान, श्री शिव भगवान, अंबा माताजी और पद्मावती माताजी की मूर्तियों की प्रतिष्ठा विधि हुई। महात्माओं द्वारा समूह में विधि व प्रार्थनाएँ हुई। प्रक्षाल, पूजन और आरती भी हुई थी। इस अवसर पर पूज्य श्री ने आशीर्वचन कहें और महात्माओं को इस जगह व व्यवस्था का लाभ प्राप्त लेने को कहा। इस सेन्टर पर हर रोज़ सुबह विधि, सत्संग और शाम को आरती होगी। इस अवसर पर 2600 महात्मा उपस्थित थे।

5-7 नवम्बर : नवसारी में पहली बार बड़े पैमाने पर पूज्य श्री का सत्संग व ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। सालों से जो मुमुक्षु टी.वी. पर देख रहे थे उन्हें प्रत्यक्ष सत्संग और आत्मज्ञान प्राप्ति का अवसर प्राप्त हुआ। नवसारी जिले के अलग-अलग गाँव से 1200 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जिस एग्रिकल्चर युनिवर्सिटी में परम पूज्य दादाश्री बहुत बार जा चुके थे, उसी जगह पूज्य श्री वहाँ के स्थानीय महात्माओं के साथ मॉर्निंग वॉक लिया।

9-15 नवम्बर : वलसाड़ शहर में परम पूज्य दादा भगवान की 109वी जन्मजयंती का महोत्सव आनंद और उल्लास के साथ मनाया गया। पूज्य श्री द्वारा 'वाणी मीठी कैसे बनें' और 'समभाव व विषमभाव' टॉपिक पर सत्संग और प्रश्नोत्तरी सत्संग भी हुए। महोत्सव के दौरान पूज्य श्री द्वारा आप्तवाणी-9 (हिन्दी), टकराव टालो (उडीया), स्वरमणा-30, स्वरमणा-4 (हिन्दी) ऑडियो सीडी का विमोचन हुआ। इस बार थीम पार्क में टकराव टालो, मानवधर्म, व्यसन मुक्ति और धर्म व अध्यात्म टॉपिक पर नए मल्टी मीडिया शॉ तैयार हुए थे। इसके अलावा 'हुआ सो न्याय' और परम पूज्य दादा भगवान के जीवन चारित्र पर 3D मैपिंग शो बनाए गए थे। चिल्ड्रन पार्क में भी I Spread Happiness, जादुई चश्मा, जादुई रबड़, पपेट शो और एम्फी थीएटर जैसे आकर्षण थे। पहले दिन पूज्य श्री ने महोत्सव स्थल पर पधारकर दादा व नीरू माँ के पूजन के बाद मैदान में घूमकर उपस्थित महात्माओं को दर्शन दिए थे। उद्घाटन के कार्यक्रम की शुरुआत स्थानीय डांगी लोकनृत्य, 130 बच्चों द्वारा नए भक्तिगीत पर आकर्षक प्रस्तुति और विविध नृत्यों द्वारा हुई थी। ज्ञानविधि के दौरान 2100 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जन्मजयंती के दिन पूज्य श्री ने विशेष संदेश दिया और जगत् कल्याण की भावना की सामायिक करवाई। पूजन के बाद दीया-आरती करने में आई। जन्मजयंती के दिन 11,000 महात्माओं व दर्शनार्थियों को पूज्य श्री के दर्शन करने का लाभ प्राप्त हुआ। रात को प्रोफेशनल गायकों द्वारा विशेष भक्ति का कार्यक्रम हुआ। महोत्सव का लाभ 50,000 से भी ज़्यादा मुमुक्षुओं ने उठाया। पूज्य श्री द्वारा अगले साल दादा की 110 की जन्मजयंती राजकोट शहर में मनाई जाएगी ऐसी जानकारी मिली। लगभग 2800 महात्माओं ने इस महोत्सव में सेवा अर्पण की। सेवार्थी सत्संग के दौरान महात्माओं ने अपने हृदयस्पर्शी अनुभव बताए। थीम पार्क व चिल्ड्रन पार्क देखने के लिए स्थानीय लोगों की बहुत भीड़ हुई थी।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

भिलाई **दिनांक :** 14 जनवरी **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8349545600

स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास.

जबलपुर	**दि.** 11-12 जनवरी	**संपर्क :** 9425160428	**रायपुर**	**दि.** 19 जनवरी	**संपर्क :** 9329523737
भोपाल	**दि.** 13-14 जनवरी	**संपर्क :** 9425024405	**बेलगाम**	**दि.** 4 फरवरी	**संपर्क :** 9945894202
ईंदौर	**दि.** 15 जनवरी	**संपर्क :** 9039936173	**बेलगाम**	**दि.** 5 फरवरी	**संपर्क :** 9448187790
कोलकाता	**दि.** 15 जनवरी	**संपर्क :** 9830093230	**कोल्हापुर**	**दि.** 6 फरवरी	**संपर्क :** 9960787776
दिल्ली	**दि.** 15 जनवरी	**संपर्क :** 9810098564	**कोल्हापुर**	**दि.** 7 फरवरी	**संपर्क :** 9403787776
भुवनेश्वर	**दि.** 16 जनवरी	**संपर्क :** 8763073111	**हुबली**	**दि.** 8 फरवरी	**संपर्क :** 9739688818
ब्रह्मपुर	**दि.** 17 जनवरी	**संपर्क :** 9853333355	**हुबली**	**दि.** 9 फरवरी	**संपर्क :** 9900525645
कटक	**दि.** 18 जनवरी	**संपर्क :** 8763073111	**बेंगलोर**	**दि.** 10-12 फरवरी	**संपर्क :** 9590979099

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

वडोदरा में...

परम पूज्य दादा भगवान प्रेरित

निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में...

दिनांक 22 से 26 फरवरी, 2017

सत्संग : 22 फरवरी 4 से 4-30 - **स्वागत समारोह**, 22-24 फरवरी- शाम 4-30 से 7,
23 फरवरी सुबह 9-30 से 12

ज्ञानविधि : 25 फरवरी, शाम 4 से 7-30

प्राणप्रतिष्ठा : 24 फरवरी, सुबह 10 से 12 - शिव मंदिर में स्थापित सभी भगवंत
25 फरवरी, सुबह 10 से 12 - कृष्ण मंदिर में स्थापित सभी भगवंत
26 फरवरी, सुबह 9-30 से 1 - श्री सीमंधर स्वामी, श्री कृष्ण भगवान, श्री शिव भगवान

24-25 फरवरी, सुबह प्रतिष्ठा बाद प्रक्षाल-पूजन होगा, 26 फरवरी को प्रक्षाल-पूजन शाम 4 से 7 रहेगा।
रात 9 से 10 - भक्ति/गरबा/कीर्तन भक्ति

स्थल : वडोदरा त्रिमंदिर, बाबरिया कोलेज के पास, वडोदरा-सुरत हाइ-वे, NH-8, वरणामा गाँव, **वडोदरा (गुज.).**

संपर्क : 9924343335, 9825503819

बाहर से आनेवाले महात्मा-मुमुक्षुओं की व्यवस्था हेतु खास सूचनाएँ

1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 5 फरवरी 2016 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। 3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ। 5) 26 फरवरी को महात्माओं के लिए ठहरने की व्यवस्था की गई हैं, 26 तारीख की भक्ति का सभी लाभ लें।

अडालज त्रिमंदिर

17 मार्च (शुक्र), शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **18 मार्च** (शनि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

18 मार्च (शनि), सुबह 10 से 12 -**आप्तपुत्र सत्संग**

19 मार्च (रवि), शाम 4-30 से 10- **पू. नीरू माँ की 11वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

Pujya Deepakbhai's UK Satsang Schedule (2017)

Contact no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org

Date	From	to	Event	Venue
31-Mar-17	7-30PM	10PM	Satsang	Shree Prajapati Association, Ulverscroft Road, Leicester, LE4 6BY
1-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
2-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
2-Apr-17	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
21-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang in English	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, Harrow, HA3 5BD
22-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang in English	
22-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
23-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
23-Apr-17	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
24-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	

अडालज त्रिमंदिर में आप्तवाणी-13 (पू.) पर सत्संग पारायण (शिविर)

24-31 दिसम्बर - सुबह 10 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 6-45- **सत्संग**, रात 8-30 से 9-30 - **सामायिक**

1 जनवरी (रवि) - सुबह 10 से 12-30 - **श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

2 जनवरी (सोम) सुबह 10 से 12 - **कितर्न भक्ति,** शाम 6 से 7-30 **पू. दादा व दादाजी के ज्ञान पर विशेष प्रदर्शन**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। 3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

मुंबई

6 जनवरी (शुक्र), शाम 6 से 9 - **सत्संग** (**टोपिक**-लक्ष्मी हो तब)

7 जनवरी (शनि), शाम 6 से 9 - **सत्संग** (**टोपिक**-चित्त शुद्धि से मोक्ष)

8 जनवरी (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि** तथा **9 जनवरी** (सोम), शाम 6-30 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल: BMC ग्राउन्ड, कमला विहार स्पोर्टस क्लब के सामने, बोरसपाडा रोड, महावीर नगर, कांदीवली (वे.). **संपर्क :** 9323528901

औरंगाबाद

9 व 11 जनवरी (सोम व बुध), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **10 जनवरी** (मंगल), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल: संत एकनाथ रंग मंदिर, उस्मानपुरा, **औरंगाबाद (महाराष्ट्र).** **संपर्क :** 8308008897

विशेष सूचना : जो व्यक्ति बाहर से आ रहे हैं और उन्हें रहने या भोजन की सुविधा की आवश्यकता है, वे सीधे यह स्थल पर पहुँचे -यशोमंगल होल, पन्नालाल नगर, न्यु उस्मानपुरा। ज्यादा जानकारी हेतु 8308008897 पर संपर्क करें।

जलगाँव

12 जनवरी (गुरु), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-मनुष्य जीवनमें ध्येय)

13 जनवरी (शुक्र), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि** तथा **14 जनवरी** (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल: बालगंधर्व खुले नाट्यगृह, बी.जे. मार्केट के सामने, **जलगाँव (महाराष्ट्र).** **संपर्क :** 8806869874

विशेष सूचना : जो व्यक्ति बाहर से आ रहे हैं और उन्हें रहने या भोजन की सुविधा की आवश्यकता है उन्हें दिं. 5 जनवरी तक मो. नं. 8806869874 पर रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। तथा वे सीधे यह स्थल पर पहुँचे -साखला लुकड, ओसवाल मंगल कार्यालय, बी.जे. मार्केट के पास। ज्यादा जानकारी हेतु संपर्क करें।

महेसाणा

4 फरवरी (शनि), शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-भ्रांत पुरुषार्थ, यथार्थ पुरुषार्थ)

5 फरवरी (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि** तथा **6 फरवरी** (सोम), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल: पुलीस परेड ग्राउन्ड, पुलीस हेड क्वार्टर्स, सिविल होस्पिटल के पास, **महेसाणा (गुज.).संपर्क :** 9408551501

अहमदाबाद

10 फरवरी (शुक्र), शाम 7 से 10 - **सत्संग** (**टोपिक**-कषाय घटाये वही धर्म)

11 फरवरी (शनि), शाम 7 से 10 - **सत्संग** (**टोपिक**-एडजस्टमेन्ट से हुए, संसार अच्छा)

12 फरवरी (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि** तथा **13 फरवरी** (सोम), शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल: इवेन्ट सेन्टर, टागोर होल के पीछे, रीवर फ्रन्ट रोड, पालडी, **अहमदाबाद (गुजरात). संपर्क :** 9909545999

हिंमतनगर

18 फरवरी (शनि), शाम 6 से 9 -**आप्तपुत्र सत्संग** तथा **19 फरवरी** (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

20 फरवरी (सोम), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल: मोडासीया कडवा पाटीदार समाज वाडी, सहकारी जीन चार रस्ता के पास, NH 8 **(गुज). संपर्क :** 98258

दिसम्बर 2016
वर्ष - 12 अंक - 2
अखंड क्रमांक - 134

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

नहीं करना कभी बुद्धि को मज़बूत पोषण देकर

यह बुद्धि खड़ी होती है न, तब ऐसी जागृति रखनी चाहिए ताकि यह बुद्धि शांत हो जाए। हमें उससे कहना है, 'अभी बहुत दिनों तक तेरी सुनी, तूने बहुत यश(!) दिलवाया, अब चली जा!' बुद्धि हमारे लिए हितकारी नहीं है, नुकसानदायक है। उसमें से निकली सभी डालियाँ काटने योग्य हैं। वे डालियाँ यूज़लेस हैं, व्यर्थ ही उग आई हैं, जो पूरी रात सोने भी नहीं देतीं। मुझे आपका पूरा घर उत्तम दिखाई देता है लेकिन इस बुद्धि दखल आ जाता है। कोई एक व्यक्ति बुद्धि लगाए तो दूसरा भी लगाएगा ही। अगर एक व्यक्ति बुद्धि का लगाता है तो दूसरों पर भी उसका असर होता जाता है। इसलिए तू ऐसा कुछ कर दे ताकि तेरा असर न पड़े। तेरा पुरुषार्थ है और हम कृपा कर देंगे। उसके बाद बुद्धि का सारा दखल बंद हो जाएगा लेकिन तुझे एक बात माननी पड़ेगी कि 'हुआ सो करेक्ट'। ऐसा करके तू चलने लग। तब फिर बुद्धि कसरत करके मज़बूत नहीं होगी। वर्ना बुद्धि पूरी रात कसरत करके मज़बूत होकर अगले दिन वापस लड़ेगी।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.